सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - श्री वल्लभ

Vibrant Pushti

" जय श्री कृष्ण "

"समाधि"

हमारा जीवन गृहस्थ है और गृह गृहस्थी में समाधि कैसे?

ओहह!

पर हमारे हर आचार्य, हमारे हर उपदेशी, हमारे हर शास्त्र, हमारे हर ज्ञानी ऐसा ही सदा कहते रहते है, गृहस्थ जीवन में जो समाधि पाये वह सर्वोत्तम साधना - वह सर्वोत्तम समाधि, यही ही योग्य समाधि है।

अरे! गृहस्थ जीवन में समाधि कैसे?

कहीँ आचार्य, कहीं ज्ञानी, कहीं गुरु, कहीं उपदेशी तो गृहस्थ जीवन का त्याग करके सन्यास धारण करके ही समाधि में रहते है, जीवन कृतार्थ करते है।

यह कैसी दोहरी बातें!

आचार्य, ज्ञानी, गुरु, उपदेशी आदि जो गृहस्थ जीवन त्याग करके ऐसे पद को धारण किया हो वह समाधिस्थ नही है, वह ज्ञानी हो सकते है, वह गुरु हो सकते है, वह उपदेशी हो सकते है पर समाधिस्थ नही कह सकते है।

श्री शंकराचार्यजी ने कभी ऐसा नही कहा - सन्यासी ही समाधिस्थ है।

श्री वल्लभाचार्यजी ने गृहस्थ जीवन जी कर खुद को समाधिस्थ किया। समाधि का सामर्थ्य और श्रेष्ठ अर्थ है

जो जीव तत्व - जो व्यक्तित्व आधि, व्याधि और उपाधि में न हो वह जीव तत्व - वह व्यक्तित्व समाधिस्थ है।

ओहह! पर हममें तो सदा होना छूपा है, प्रकट होना, दिखना, दिखाना। हमारा स्वभाव, प्रभाव जो जन्म से ही दिखना और दिखाना है इसीलिए हम अपने आपको खो देते है, भूल जाते है और भटक जाते है।

आधि - व्याधि - उपाधि से हम अभिमानी, अहंकारी, रोगी, भोगी, लोभी और तृषि, दोषी होते है या हो जाते है। इसीलिए हम समाधिस्थ नही हो सकते है, इसीलिए हमें सन्यासी समाधिस्थ लगते है पर सच में नही होते है और हम उन्हीं में, उनसे ही अपनों को और अपने आप को खो देते है, भटका देते है।

ओहह! श्री वल्लभ!

श्री यमुनाजी जल स्वरूप ही क्यूँ?

श्री यमुनाजी श्याम ही क्यूँ?

श्री वल्लभाचार्यजी कहते है -

"स्फुरदमन्दरेणूक्तटाम"

इतनी गूढ और असामान्य रीत श्री यमुनाजी की जताई है।

स्फुर - स्फुरना - सदा शुद्धता का उदभव करना

जैसे कठोरता में झरना का स्त्रव होना!

ओहह श्री वल्लभ!

यह संसार कितना जड़ होता जा रहा है अपनी स्वार्थ वृति से - और आप ऐसी जड़ता में श्री यमुनाजी का प्राकट्य करना अर्थात - हम जैसे मनुष्य जो जड़ता में जुड़े है, जड़ता से बंधे है उनमें श्री यमुनाजी को बूँद बूँद से स्फुरना!

पुष्टि रीत से स्फुरना!

पूर्णता के लिए स्फुरना

प्रीतता के लिए स्फुरना

श्यामता से स्फुरना

धवलता से स्फुरना

ध्वतता से स्फुरना

अद्वैतता से स्फुरना

मेरे प्रिये वल्लभ!

"Vibrant Pushti"

"श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय"

ओहह !

हम जब भी उन्हें स्मरण में लाते है

हम जब भी उन्हें स्मरण करते है

हम जब भी उनका दर्शन करते है

हम जब भी उन्हें स्पर्श करते है

हम जब भी उनका पान करते है

या

जब भी हम अपने अंतर आत्मा से श्री यमुनाजी को हृदयस्थ करे हुए है तब

एक उत्साह और पवित्रता के साथ पुकारते है

"श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय"

क्यूँ?

श्री वल्लभाचार्यजी की सर्वांक्षा

श्री वल्लभाचार्यजी की आराध्या

श्री वल्लभाचार्यजी की एकात्मता

श्री वल्लभाचार्यजी की पुष्टिता

कितनी प्रचंड है, कितनी द्रढ है, कितनी प्रबल है, कितनी आंतरिक है, कितनी योग्य है जो हमें शिक्षते है

"श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय"

तो क्या है यह श्री यमुना?

"Vibrant Pushti"

"गूँजा मधुरा माला मधुरा

यमुना मधुरा वीचिर्मधुरा"

गूँजा

गूँज से गूँजा हुआ।

हर एक वैष्णव की गूँज

हर एक गोपि की गूँज

हर एक गोप की गूँज

हर एक आचार्य की गूँज

हर एक पुष्टि तत्व की गूँज

हर एक सृष्टि की गूँज

हर एक प्रकृति की गूँज

हर एक ब्रहम की गूँज

जो गूँज से गूँजा अधिक द्रढ हुई है

कैसी गूँज थी वैष्णव की

कैसी गूँज थी गोपि की

कैसी गूँज थी गोप की

कैसी गूँज थी आचार्य की

कैसी गूँज थी पुष्टि तत्व की

कैसी गूँज थी सृष्टि की

कैसी गूँज थी प्रकृति की

कैसी गूँज थी ब्रहम की

गूँज सदा आंतर ध्वनि है

गूँज सदा आंतर नाद है

गूँज सदा आंतर सूर है

गूँज सदा आंतर पुकार है

गूँज सदा आंतर आहवान है

यहाँ श्री वल्लभाचार्यजी ने जो गूँज लिख कर

यहाँ श्री वल्लभाचार्यजी ने जो गूँज कही

यहाँ श्री वल्लभाचार्यजी ने जो गूँज गाई

यहाँ श्री वल्लभाचार्यजी ने जो गूँज अनुभई

ओहह श्री वल्लभ!

आपश्री हमें क्या स्पर्श कराके क्या क्या परिवर्तन कराते हो?

"Vibrant Pushti"

अधरं मधुरं वदनं मधुरं

नयनं मधुरं हसितं मधुरम ।

श्री कृष्ण अधरं।

श्री कृष्ण मधुरं।

श्री कृष्ण वदनं।

श्री कृष्ण मधुरं।

श्री कृष्ण नयनं।

श्री कृष्ण मधुरं।

श्री कृष्ण हसितं।

श्री कृष्ण मधुरम।

हृदयं मधुरं गमनं मधुरं

श्री राधा हृदयं।

श्री राधा मधुरं।

श्री राधा गमनं।

श्री राधा मधुरं।

मधुराधिपते रखिलं मधुरम।

वचनं मधुरं चरितं मधुरं

वसनं मधुरं वलितं मधुरम।

श्री नाथ वचनं।

श्री नाथ मधुरं।

श्री नाथ चरितं।

श्री नाथ मधुरं।

श्री नाथ वसनं।

श्री नाथ मधुरं।

श्री नाथ वलितं।

श्री नाथ मधुरम।

चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं

श्री सखी चलितं।

श्री सखी मधुरं।

श्री सखी भ्रमितं।

श्री सखी मधुरं।

मधुराधिपते रखिलं मधुरम।

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुर पादौ मधुरौ।

श्री गिरिराज वेणु

श्री गिरिराज र्मधुरो।

श्री गिरिराज रेणु।

श्री गिरिराज र्मधुरः।

श्री गिरिराज पाणि।

श्री गिरिराज र्मधुरः।

श्री गिरिराज पादौ।

श्री गिरिराज मधुरौ।

नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं

श्री सखा नृत्यं।

श्री सखा मधुरं।

श्री सखा सख्यं।

श्री सखा मधुरं।

मधुराधिपते रखिलं मधुरम।

गीतं मधुरं पीतं मधुरं

भक्तं मधुरं सृप्तं मधुरम।

श्री गोपि गीतं।

श्री गोपि मधुरं।

श्री गोपि पीतं।

श्री गोपि मधुरं।

श्री गोपि भक्तं।

श्री गोपि मधुरं।

श्री गोपि सृप्तं।

श्री गोपि मधुरम।

रुपं मधुरं तिलकं मधुरं

श्री यशोदा रुपं।

श्री यशोदा मधुरं।

श्री यशोदा तिलकं।

श्री यशोदा मधुरं।

मधुराधिपते रखिलं मधुरम।

करणं मधुरं तरणं मधुरं

हरणं मधुरं रमणं मधुरम।

श्री वल्लभ करणं।

श्री वल्लभ मधुरं।

श्री वल्लभ तरणं।

श्री वल्लभ मधुरं।

श्री वल्लभ हरणं।

श्री वल्लभ मधुरं।

श्री वल्लभ रमणं।

श्री वल्लभ मधुरम।

वमितं मधुरं शमितं मधुरं

श्री नंद वमितं।

श्री नंद मधुरं।

श्री नंद शमितं।

श्री नंद मधुरं।

मधुराधिपते रखिलं मधुरम।

गुञ्जा मधुरा माला मधुरा

यमुना मधुरा वीचिर्मधुरा।

श्री यमुना गुञ्जा।

श्री यमुना मधुरा।

श्री यमुना माला।

श्री यमुना मधुरा।

श्री यमुना यमुना।

श्री यमुना मधुरा।

श्री यमुना वीचि।

श्री यमुना र्मधुरा।

सलिलं मधुरं कमलं मधुरं

श्री व्रज सलिलं।

श्री व्रज मधुरं।

श्री व्रज कमलं।

श्री व्रज मधुरं।

मधुराधिपते रखिलं मधुरम।

गोपि मधुरा लीला मधुरा

युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम।

श्री गोवर्धन गोपि।

श्री गोवर्धन मधुरा।

श्री गोवर्धन लीला।

श्री गोवर्धन मधुरा।

श्री गोवर्धन युक्तं।

श्री गोवर्धन मधुरं।

श्री गोवर्धन भुक्तं।

श्री गोवर्धन मधुरम।

इष्टम मधुरं शिष्टम मधुरं

श्री अष्टसखा इष्टम।

श्री अष्टसखा मधुरं।

श्री अष्टसखा शिष्टम।

श्री अष्टसखा मधुरं।

मधुराधिपते रखिलं मधुरम।

गोपा मधुरा गावो मधुरा

यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा

श्री पुष्टि गोपा।

श्री पुष्टि मधुरा।

श्री पुष्टि गावो।

श्री पुष्टि मधुरा।

श्री पुष्टि यष्टि।

श्री पुष्टि र्मधुरा।

श्री पुष्टि सृष्टि।

श्री पुष्टि र्मधुरा।

दलितं मधुरं फलितं मधुरं

श्री सेवा दलितं।

श्री सेवा मधुरं।

श्री सेवा फलितं।

श्री सेवा मधुरं।

मधुराधिपते रखिलं मधुरम।

दृष्टिम मधुरं कृतिं मधुरं

प्रीति मधुरं रासं मधुरं

श्री ब्रह्मसंबंध दृष्टि।

श्री अष्टाक्षर मंत्र मधुरं।

श्री षोडसग्रंथ कृतिं।

श्री रीति मधुरं।

श्री आत्मनम प्रीति।

श्री एकात्मन मधुरं।

श्री परमं रासं।

श्री अशं मधुरं।

मधुराधिपते रखिलं मधुरम।

मन मधुरं तन मधुरं

जन्म मधुरं जीवन मधुरं।

श्री व्रजरज मन।

श्री गौचारण मधुरं।

श्री श्याम तन।

श्री श्यामा मधुरं।

श्री भक्त जन्म।

श्री समर्पण मधुरं।

श्री पुष्टि सिद्धांत जीवन।

श्री दामोदर मधुरं।

मधुराधिपते रखिलं मधुरम।

इति श्रीवल्लभाचार्यविरंचित मधुराष्टकं स्माप्तम।

"Vibrant Pushti"

"कृष्ण" क्या क्या है?

हमारे परम प्रिय श्री आचार्यजी हममें श्री कृष्ण का निरूपण कैसे करते है?

हम जो भी मनुष्य है, हममें विशुद्धता, पवित्रता, विश्वसनीयता, योग्यता, अखंडता, स्थिरता और आनंदमयता का उत्स जो करें और धरे वही हमारे परम प्रिय गुरु है, हमारे परम प्रिय आचार्य है।

संप्रदाय कोई भी हो पर जो हममें अपनी

अनन्ता एव कृष्णस्य लीला नामप्रवर्तिका:।

पुरुषो ध्यानमत्रोतक्तमं सिद्धि: शरणसंस्मृति:।

भक्तोध्दवार प्रयत्नात्मा जगत्कर्ता जगन्मय:।

भक्तिप्रवर्तकस्त्राता व्यासचिन्ताविनाशक:।

अन्तरात्मा ध्यानगम्यो भक्तिरत्नप्रदायक:।

भक्तकार्यकनिरतो द्रौण्यस्त्रविनिवारक:।

भक्तसम्यप्रणेता च भक्त वाक्परिपालक:।

ब्रह्मण्यदेवो धर्मात्मा भक्तानां च परीक्षक:।

उत्तराप्राणदाता च ब्रह्मास्त्रविनिवारक:।

ओह्ह मेरे श्रेष्ठतम श्री प्रभु!

ओह्ह मेरे परम श्रेष्ठ श्री आचार्य!

आपने हमें क्या क्या रहस्य कह दिये, सार्थक किया, सिद्ध किये, प्रमाणित किये।

आपको हमारा कोटि कोटि वंदन!🙇

आपको हमारा साष्टांग दंडवत प्रणाम!🙇

कितनी सहजता और सरलता से हममें श्री कृष्ण को उत्स किया और निरुपण किया।

अदभुत!

"Vibrant Pushti"

"स्वरुपम एव न जानती"

श्री वल्लभाचार्य

हम अपने आप का स्वरुप नहीं जानते

हम कैसे दूसरे स्वरुप को जानेंगे?

जगत, प्रकृति, सृष्टि अनगिनत स्वरुपों से है, न हम अपने स्वरुप को जानते है न कोई और स्वरुप को पहचानते है। तो हम क्या कर रहे है, कैसी कैसी सेवा और संबंध करते रहते है?

बिना समझ हम

बिना जानत हम

बिना पहचानत हम जो भी कुछ करते है वह व्यर्थ है।

इसीलिए

श्री वल्लभाचार्य कहते है

"स्वरुपम एव जानत सर्वम भुनक्तु"

"स्वरुपम एव जानत सर्वम सर्वोत्तम"

"स्वरुपम एव जानत सर्वम सार्थकं"

"स्वरुपम एव जानत सर्व शुद्धतम"

"स्वरुपम एव जानत सर्वम प्रियतम"

बिना जानत हम एक अविचारित जीव हो कर केवल और केवल खुद को भटकाते रहते है, असमंजस हो कर जीते रहते है, हर रीत से घुमते और घुमाते रहते है।

कभी शांति से अकेले बैठ कर सोचों - हम क्या क्या जानते है? केवल पैसा बनाना, प्रतिष्ठा कमाना, माया में लूटना और भटकना।

तो हम सेवा करते है किसकी?

तो हम आज्ञा लेते है किसकी?

तो हम धर्म धारण करते है किसका?

तो हम दर्शन अर्चना करते है किसकी?

ओहह! श्री वल्लभ!

"Vibrant Pushti"

वार्ता कर दिया चरित्र को

इतिहास कर दिया एक सत्य को

भूतकाल कर दिया वर्तमान को

सुख कर दिया सच्चिदानंद को

दु:ख कर दिया एक विशुद्ध दर्द को

देव कर दिया परमेश्वर को

साधन कर दिया साक्षात को

नेह कर दिया परमप्रीत को

यंत्र कर दिया प्राकृतिक को

विष कर दिया विश्वास को

कैसे है हम!

जो पूर्ण पुरुषोत्तम रुप से प्रकट भये

श्री कृष्ण कन्हैया को आकार कर दिया

कुछ करें ऐसा जो आकार को साकार कर दे

कुछ जगायें ऐसा जो निराकार को साकार कर दे

ओहहहह! श्री वल्लभ!

"Vibrant Pushti"

"श्री कृष्ण शरणं मम:" धून गाये

"जय श्री कृष्ण" मंत्र आंतर मुख से जागे

आज श्री वल्लभ पधारे मेरे द्वार

मैं नीत नीत नाचुं आज

ढोल मंजीरा बाजे

उडे लाल गुलाल

प्रीत बंधन की माला सिद्ध करी

ब्रह्म संबंध की आण गंठन करी

पुष्टि रीत कीर्तन से उर्जा जगायी

मधुरम गीत से गूँज उठाई

आये मेरे वल्लभ प्यारे मेरे वल्लभ

पधारे मेरे वल्लभ स्पर्शे मेरे वल्लभ

नजर में वल्लभ नजारों में वल्लभ

नैनों में वल्लभ दर्शन में वल्लभ

होठों पर वल्लभ कर्णों पर वल्लभ

अंग अंग में वल्लभ संग संग में वल्लभ

रोम रोम में वल्लभ रज रज में वल्लभ

साँस साँस में वल्लभ दास दास में वल्लभ

रुप रुप में वल्लभ रुह रुह में वल्लभ

ब्रह्म में वल्लभ ब्रह्मांड में वल्लभ

सृष्टि में वल्लभ युक्ति में वल्लभ

जगत में वल्लभ भक्त में वल्लभ

संसार में वल्लभ सार सार में वल्लभ

आकाश में वल्लभ प्रकाश में वल्लभ

साकार में वल्लभ आकार में वल्लभ

धरती पर वल्लभ हस्ती पर वल्लभ

वल्लभ वल्लभ वल्लभ वल्लभ

"Vibrant Pushti"
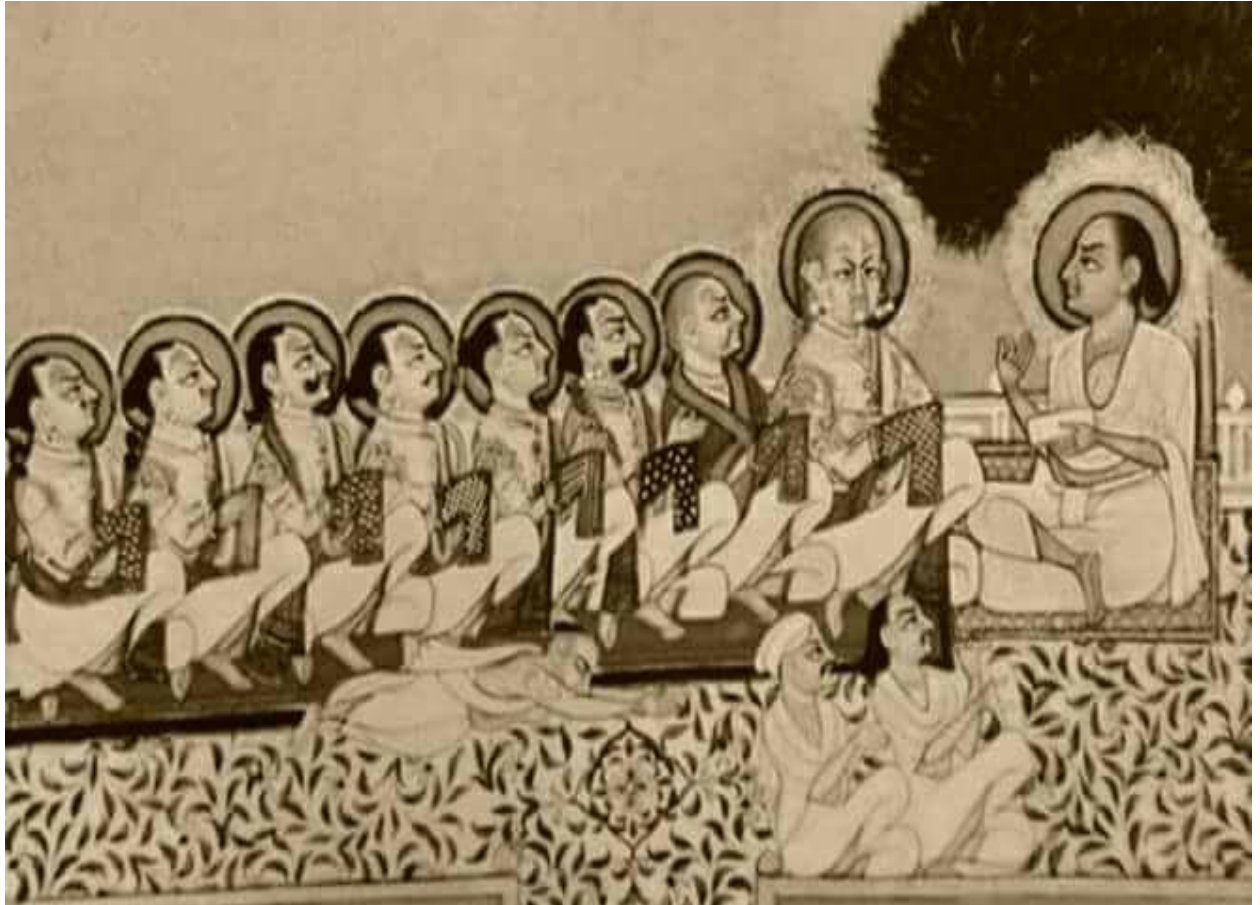
"वल्लभ"

ब्रह्मांड का आनंद है

प्रकृति की वसंत है

सृष्टि की मधुरता है

जगत की सुबह है

संसार की खुशी है

"वल्लभ" कोई शब्द नहीं है, नाम नहीं है।

"वल्लभ" कोई मंत्र नहीं है, कोई जप नहीं है।

"वल्लभ" कोई व्यक्ति नहीं है, कोई संस्कृति नहीं है।

"वल्लभ" कोई साधन नहीं है, कोई संबंध नहीं है।

"वल्लभ" तो उर्जा है, स्पर्श है।

"वल्लभ" तो अनुभूति है, अनुमति है।

"वल्लभ" तो साक्षात है, सर्वज्ञ है।

"वल्लभ" तो विशुद्ध है, विश्वास है।

"वल्लभ" तो सत्य है, सर्जन है।

"वल्लभ" तो सेवा है, प्रीत है।

"वल्लभ" का हृदयस्थ और आत्मसात अर्थ है - आनंद।

जीवन के हर प्रकार का आनंद में वल्लभ समाये हुए है।

वल्लभ है - आनंद है।

जीव है तो वल्लभ है - वल्लभ है तो आनंद है

जीव तत्व के हर तत्व में आनंद है

यही ही पुष्टि सेवा प्रीत रीत है।

प्रकट भये श्री वल्लभ

पधारे हमारे द्वार द्वार

हर तन मन धन आत्म

व्रज रज बने, यमुना बने

हर रोम रोम साँस साँस

गोवर्धन बने, अष्टसखा बने

कण कण पुष्टि धाम

हर निकुंज हर यमुना घाट

श्री वल्लभ बसे घट घट

यही है पुष्टि वैष्णव लीला

ऐसे ही बसे "श्री नाथजी नाथ"

"Vibrant Pushti"

हे श्री वल्लभ!

जब पलक मेरी खुले

तेरे चरण दर्श मैं पाऊँ

जब प्रथम साँस मैं खींचु

तेरी महक मैं स्पंदनु

चोक्कस करना यह स्वामी

जब प्रातः समय मैं उठु

नैन दर से मन स्परशे

मेरे तन आत्म जगाना

मुखारविंद से अपना

सारे रोम रोम में बसना

चोक्कस करना हे स्वामी

जब प्रथम दरश निहालु

"जय श्री कृष्ण" पुकारु

अंग अंग तुझे दंडवताऊ

पुलकित तन मन धन से

सदा चरण तेरे पखालु

सेवा स्वीकारना स्वामी

जब तेरे शरण में ध्याऊ

पुष्टि प्रीत सिद्धांत से

जनम का जीवन संवारु

पुष्टि दासत्व शिक्षा पाके

वैष्णवता की सृष्टि जगाऊ

एक जीव की है एक अर्जी

जन्म जन्म पुष्टि में रंगाऊ

हे वल्लभ!

चोक्कस यही विनंती धरना

प्रथम पलक मेरी खुलना

"Vibrant Pushti"

"मगवद् शास्त्रम् आज्ञाय विचार्य च पुनः पुनः।।

यद् उक्तं हरिणा पश्चात् संदेह विनिवृत्तये।।"

"श्री वल्लभिचार्यजी" समझाते है

भगवद् शास्त्र का पठन और गान करने से अनेकानेक आज्ञा हमें संस्कृत करके आनंद प्रकट करने की रीत सिंचित करते है, यही आज्ञा का बार बार पालन करते है तो जीवन कृतार्थ और परमार्थ हो जाता है।

हमारे विचार शुद्ध होते है।

हमारी क्रिया योग्य होती है।

हमारी स्थिति और परिस्थिति रोग और दुःख प्रतिरोधक होती है।

हमारा जीवन अध्यात्मिक होता है।

हमारी रुढिचुस्तता और अज्ञान मान्यता नष्ट करती है।

हमारा विश्वास और निश्चय ढ्रड करती है।

संसार का हर संदेह दूर करती है।

हमारा लक्ष्य सार्थक करती है।

यही तो सर्वोत्तमता है मनुष्य जीवन की

यही तो सर्वाधिकता है मनुष्य संस्कृति की

यही तो सर्वोच्चता है मनुष्य कर्म की

यही तो विशुद्धता है मनुष्य प्रेम की

यही तो पवित्रता है मनुष्य जन्म की

यही तो सत्यता है मनुष्य गति की

"Vibrant Pushti"

"निर्दोष पूर्ण गुण विग्रह आत्मतंत्रो निश्चेतनात्मक शरीर गुणैश्च हीन:।

आनंद मात्र कर पाद मुख उदर आदि: सर्वत्र च त्रिविधभेद विसर्जित आत्मा।।"

श्री वल्लभ" कितनी सूक्ष्मता से श्री प्रभु के दर्शन कैसे करना होता है और दर्शन करके हममें क्या प्रकट होता है? यही प्राकट्य से हमारा क्या परिवर्तन होता है।

अदभुत आज्ञा से हमें अनुभूति की चेष्टा करते है।

"श्री प्रभु" के रूप स्वरूप और साकार दर्शन में "श्री प्रभु" का विग्रह निर्दोष भाव सभर पूर्ण गुणों से युक्त हर उर्मि जागृत कर रहे है। जो दर्शन पानेवाले को तादात्म्य करते है, यह तादात्म्य से अरसपरस निर्दोषता एक दूजे को प्रदान करते है, जिससे जीव तत्व के हर सांसारिक दोष जो ज्ञान से हो या अज्ञान से हो, अपनी दृष्टि से निवार देते है और जीव को अपनी असीम कृपा से कृतार्थ करते है।यह परस्पर विरोधी तन मन और धन की क्रियाओं का विच्छेदन करके अपनी निर्दोषता अपने विग्रह स्वरूप से जीव तत्व में जागृत करते है। यह निवारण लीला से जीव तत्व में अपने पूर्ण गुणों से युक्त करके उनमें आनंद की उर्मि निरुपित करते है।

वाह! श्री वल्लभ! वाह!

आपकी कृपा हम पर सदा हमें पुष्टि करती रहे।

यही है दर्शन।

"Vibrant Pushti"
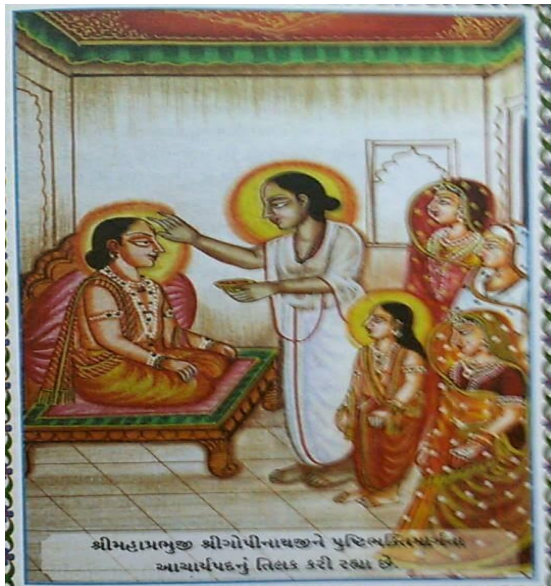
सच में आज जो दर्शन पाया!

सच में आज नयन ने स्पर्श पाया!

सच में आज साँसों ने उर्जा पाया!

सच में आज धडकन में तस्वीर जागी!

सच में आज आत्म से परम आत्म ने छुआ!

सच में आज व्रज रज की धूलि से तन सँवारा!

सच में आज श्री वल्लभ के पुष्टि रस का प्रसाद पाया

सच में आज श्री यमुनाजी के पुष्टि रस का पान पाया

सच में आज श्री गिरिराजजी के पुष्टि रस की परिक्रमा पायी

सच में आज श्री श्रीनाथजी के पुष्टि रस मधुर हास्य पाया

सच में आज श्री अष्टसखा की पुष्टि रस कीर्तन गूँज पायी

"Vibrant Pushti"
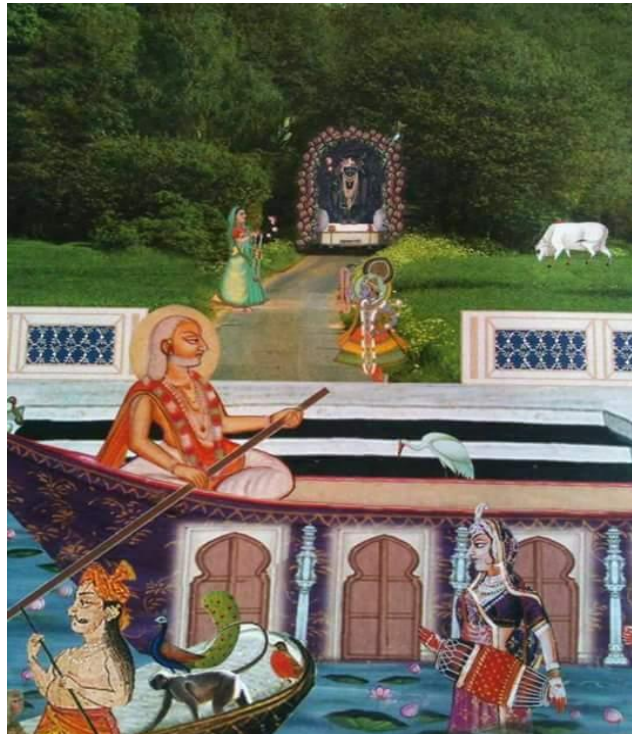
"नमो भगवते तस्मै कृष्णायाऽद्भुत कर्मेण ।।

रुप नाम विभेदेन जगत् क्रीडति यो यत: ।।

परम आत्मा "श्री कृष्ण" का प्रादुर्बभूव केवल और केवल जगत के हर तत्व के उद्धार के प्रयत्न के लिए ही हुआ है, उनके हर विचार, क्रिया का और जन्म का यही प्रयोजन है।

इसलिए श्री वेद व्यासजी ने जो श्री मद् भागवत की रचना केवल यही विशुद्धि के लिए ही किया है।

"भगवति जीवै: नमनमेव कर्तव्य न अधिकं शक्यमिति सिद्धांत।।"

ओहहह! कितना उत्तम!

श्री वेदव्यासजी ने अति सूक्ष्मता से यह सिद्धांत कहा और श्री वल्लभाचार्यजी ने सार्थक किया।

जो जीव खुद को केलवनी दे कर खुद को पुष्टि स्पर्श करवाये ।

यही सर्वोच्च और सर्वोत्तम है।

खुद की केलवनी और पुष्टि स्पर्श के लिए है।

शरणागत ज्ञान और भाव।

" Vibrant Pushti "
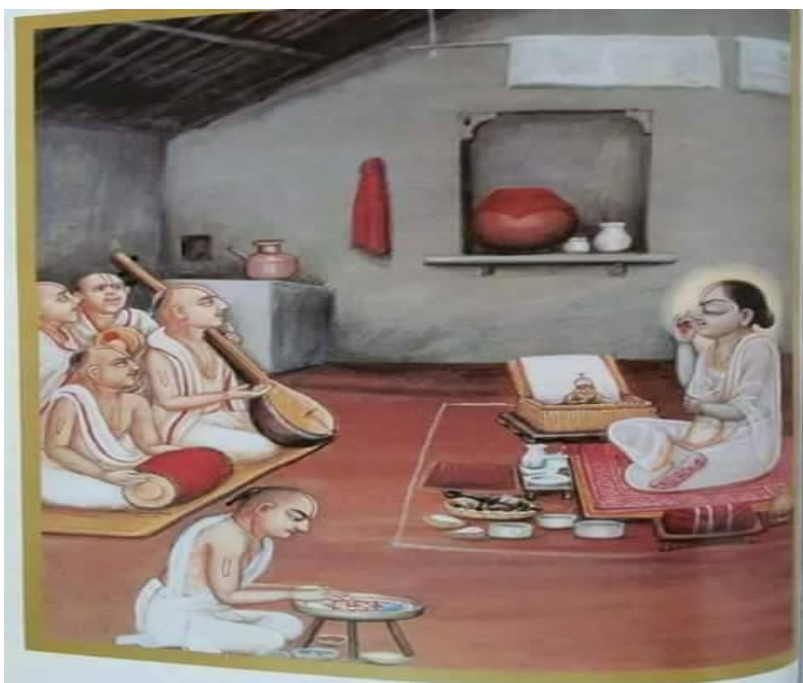
"श्री वल्लभाचार्यजी" ने "श्री प्रभु कृष्ण" को ही अपना सर्वेसर्वा जाना।

सदा "श्री कृष्ण" से ही जूड़ते रहे, स्पर्श करते रहे और खुद को न्योछावर करके जन्म और जीवन को मधुर और तेजोमय कर दिया।

अदभुत! अलौकिक! अनहद और पुष्टि प्रीत पायी और प्रकट की।

" Vibrant Pushti "

वल्लभ वल्लभ ज्ञान मारा मनने उजाळे छे

मनने उजाळे छे मारा जीवनने उद्धारे छे

पुष्टि प्रीत सेवा दर्शावी

तन मनमां मधुरता जगावी

मारा अंग अंग श्री प्रभु स्पर्श पमाय

रोम रोम प्रीत प्रसराय

वल्लभ वल्लभ ज्ञान मारा मनने उजाळे छे

श्री नाथ चरित्र समझावी

संसार ना दोष नष्ट करावी

मारा आत्म परब्रह्म संबंध जोडाय

जन्म सफल उद्धारण जताय

वल्लभ वल्लभ ज्ञान मारा मनने उजाळे छे

अष्ट सखा कीर्तन गान करावी

जीवन कला रीत शिखवाडी

मारा श्वास श्वास पुष्टि केळवाय

जीवन मधुर मधुर छलकाय

वल्लभ वल्लभ ज्ञान मारा मनने उजाळे छे

"Vibrant Pushti"

"कृष्ण" हर आत्मा का परमात्मा है।

"कृष्ण" हर जीव का रक्षक है।

"कृष्ण" हर संस्कार का शिक्षक है।

"कृष्ण" हर प्रीत का भिक्षुक है।

"कृष्ण" हर ब्रह्म का परब्रह्म है।

"कृष्ण" हर गुण का सतगुण है।

"कृष्ण" हर तत्व का परंतत्व है।

"कृष्ण" हर साँस की विशुद्धि है।

"कृष्ण" हर सिद्धि की परंसिद्धि है।

"कृष्ण" हर ख्याल का सृजन है

"कृष्ण" हर आँगन की तुलसी है।

"कृष्ण" हर दिप की ज्योति है।

"कृष्ण" हर कृति की संस्कृति है।

"कृष्ण" हर ज्ञान की उत्पत्ति है।

"कृष्ण" हर भाव की भक्ति है।

"कृष्ण" हर मुर की मुक्ति है।

"कृष्ण" हर रीत का अर्थ है।

"कृष्ण" हर मार्ग की जागृति है।

"कृष्ण" हर अक्षर की शिक्षा है।

"कृष्ण" हर किरण की शक्ति है।

"कृष्ण" हर सूर का संकेत है।

"कृष्ण" "कृष्ण" "कृष्ण" "कृष्ण"

परब्रह्म के ब्रह्मांड में अनगिनत ब्रह्म है, हर ब्रह्म का खुद का ब्रह्मांड है - खुद का जगत है - खुद का जीवन है। यह जीवन के पुरुषार्थ से ही वह अपना आत्मा को परब्रह्म में परिवर्तित कर सकता है। जो हर एक जन्म से उसकी ओर गति करता है, यह गति उनके विचार, उनकी क्रिया, उनकी संस्कार सिंचन की वृत्ति, उनकी आत्मसात करने की चेतना, उनका प्रकृति के साथ का समन्वय, उनका अनेक तत्वों से स्पर्श से जागती उर्जा, उनके उत्कर्ष से जागते सूर, उनके उत्कर्ष से जागते अक्षर, उनके उत्कर्ष से जागते कर्म फल, उनके उत्कर्ष से जागती परिस्थिति, उनके उत्कर्ष से जागता संजोग, उनके उत्कर्ष से जागता परिणाम, उनके उत्कर्ष से जागती मान्यता, उनके उत्कर्ष से जागता निर्णय, उनके उत्कर्ष से जागता निर्माण, उनके उत्कर्ष से जागती सेवा, उनके उत्कर्ष से जागता धर्म और उनके उत्कर्ष से जागती उर्जा क्या क्या करती है और कर देती है?

सच! अनोखा है जगत

अनोखा है संसार

अनोखी है सृष्टि

अनोखी है प्रकृति

अनोखा है ब्रह्म

अनोखा है ब्रह्मांड

अनोखा है परब्रह्म

अनोखी है प्रीत

"Vibrant Pushti"

साँसों की आवन वल्लभ गाये

साँसों की जावन वल्लभ गाये

मन की उदभवता वल्लभ गुन गुनाये

मन की चंचलता वल्लभ बहाये

नैन की पलक वल्लभ बुलाये

नैन की अपलक वल्लभ निहाले

होठ के सूर वल्लभ सुनाये

होठ की गूँज वल्लभ खिलाये

अधर के बंध वल्लभ पुकारे

अधर के खुलन वल्लभ सोहाये

तन की शुद्‌ध वल्लभ महकाये

तन के स्पंदन वल्लभ जगाये

आत्म की प्यास वल्लभ जताये

आत्म की आश वल्लभ जताये

पग की गति वल्लभ ढूँढे

पग का विराम वल्लभ नचाये

वल्लभ वल्लभ हर ओर वल्लभ

वल्लभ वल्लभ हर रीत वल्लभ

मेरे प्रिय प्रियतम वल्लभ

मेरे प्रिय वल्लभ ही वल्लभ

अटपटे विचारों, कर्मो, जीव सृष्टि और प्रकृति में फसे आत्म तत्व को योग्य दिशा में पहूँचाने श्री वल्लभ पधारते है।

आंतर और बाह्य जगत में फैला हुआ अविद्या का पदुषण को विशुद्ध तनुनवत्व का सिंचन करने श्री यमुनाजी पधारते है।

पंच महाभूत तत्वों से रचा हुआ यह शरीर अगणित तत्वों के संसर्ग से जो बार बार परिवर्तन होता है उनके रज रज में ज्ञान और भक्ति का पार्दुभाव करने श्री गिरिराजजी पधारते है।

"Vibrant Pushti"
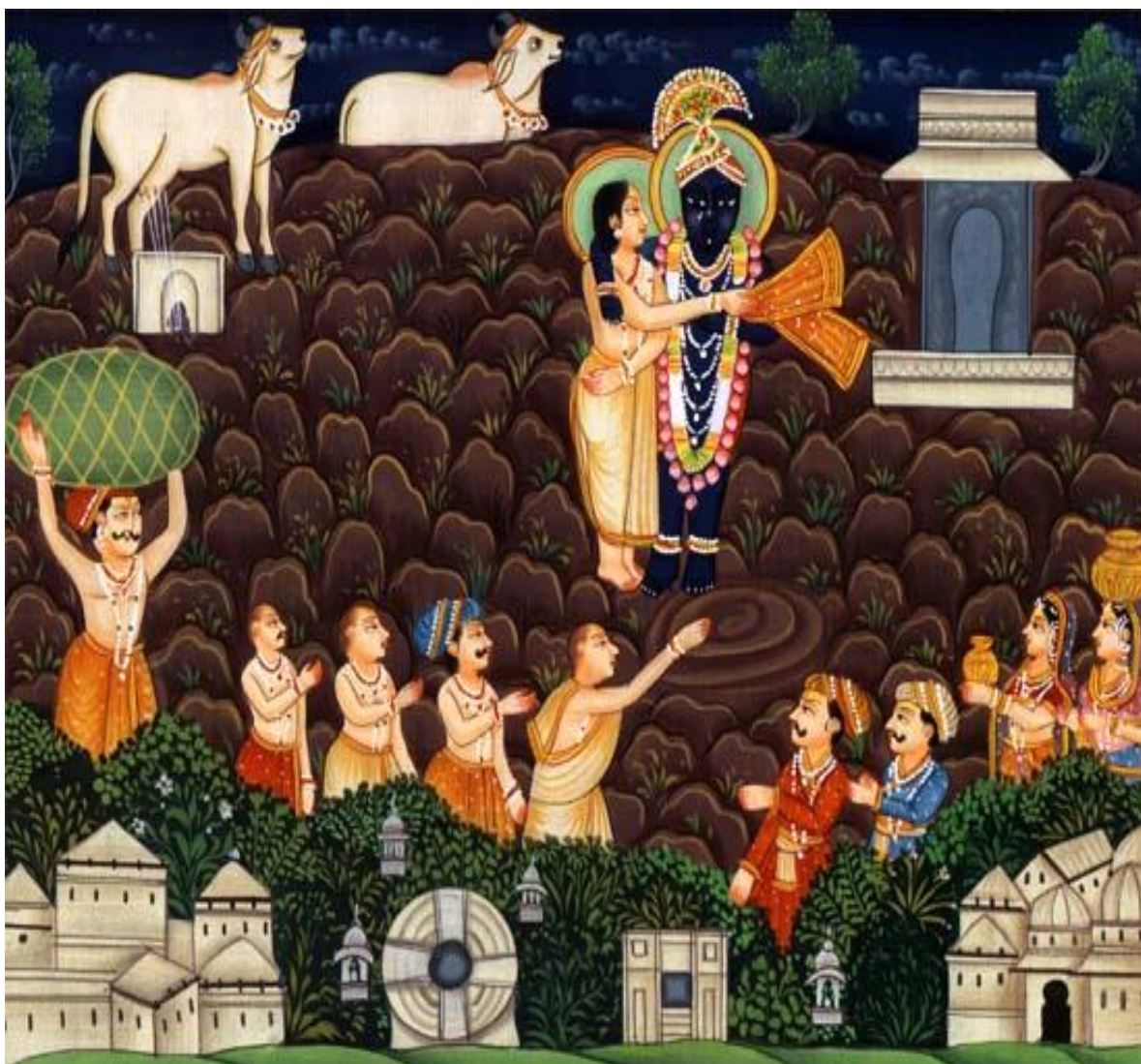
मोहे भायो वल्लभ संग

जीवन सुहायो रे

मोहे लाग्यो पुष्टि रंग

अंग अंग बसायो रे

मोहे जगायो अष्टसखा अभंग

पल पल पुकारयो रे

मोहे स्पर्शयो सुबोधिनि सत्संग

जन्म सुधार्यो रे

"Vibrant Pushti"

वंदन करे श्री वल्लभ गुरु वर को

प्रणाम करे श्री परम दयाल वल्लभ को

नमन करे श्री नृपति वल्लभ को

दंडवत करे श्री पुष्टि दंडक वल्लभ को

"Vibrant Pushti"
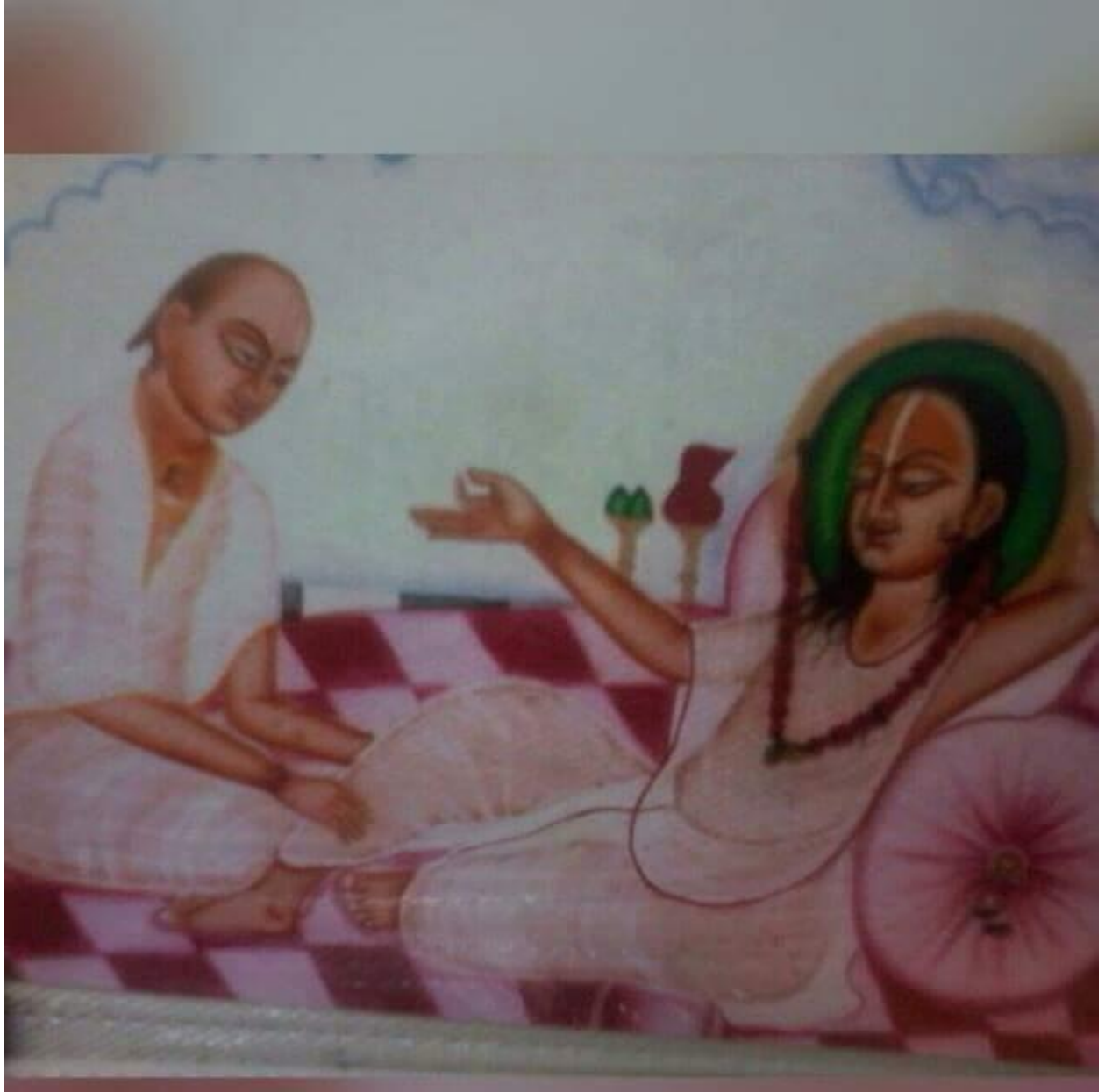
"जय श्री कृष्ण"

यह जय घोष और यह सूत्र का प्राकट्य और रचना कैसे हुई? आज हम सत्य कहते है।

"जय श्री कृष्ण"

जब श्री वल्लभ अपनी प्रथम परिक्रमा कर रहे थे और उन्हें संकेत पाया "श्री नाथजी" प्राकट्य का और उन्हें आज्ञा की "श्री वल्लभ" आप पधारो गोवर्धन और हमें पूर्ण स्वरुप से प्रस्थापित करो।

तो वल्लभ जब दौडके गोवर्धन पहूँच कर सब परम वैष्णवों का साथ लेकर श्री गोवर्धन उपर पहूँच रहे थे तब "श्री श्रीनाथजी" अपने पूर्ण रुप से बाहर प्रकट हो कर श्री वल्लभ को मिलने दौडने लगे, यहाँ श्री वल्लभ दौडके "श्री श्रीनाथजी" को मिलने दौडे और दोनों के नैन से नैन एक हुए और जब "श्री श्रीनाथजी" श्री वल्लभ को गले लगा कर प्रथम मिलन किया तब श्री वल्लभ के मुख से प्रकट भये यह जय घोष और सूत्र "जय श्री कृष्ण"

यही है प्रथम पुष्टि प्रीत सूत्र की प्राकट्य लीला।

हमें इसलिए जब भी जो भी मिले हमें "जय श्री कृष्ण" करना चाहिए।

यही ज्ञान और भाव है परम गुरु अखंड भू मंडलाचार्य श्री वल्लभाचार्यजी का।

बोलो श्री वल्लभाधिश की जय!

साष्टांग दंडवत प्रणाम स्वीकार करें!

"Vibrant Pushti"

बंजर थी यह तन भूमि

न बूँद था न मिट्टी थी

रेत था या कंकर सैलाब

डग भरा वल्लभ चरण ने

फूल खिला पुष्टि अंग में

व्रज हो गया मेरा तन

यमुना हो गई मेरा मन

गिरिराज हो गया मेरा धन

अष्टसखा हो गये मेरा जीवन

श्रीनाथजी हो गये मेरी धडकन

वैष्णव हो गये मेरे दर्पण

"Vibrant Pushti"

पथ्थर बनके पडे थे कहीं सुनी राह में

रज उड कर छूयी वल्लभ सिद्धांत की

मन सिंचि पुष्टि रस श्री यमुना

अंग अंग बसी भक्ति हरिदासवर्य

साँस साँस पुकारे "जय श्री कृष्ण"

रसना गाये "श्री कृष्ण शरणं मम्:"

नैन दरशे श्रीनाथजी घडी घडी

आत्म परमआत्मा प्यास मिटी

"Vibrant Pushti"
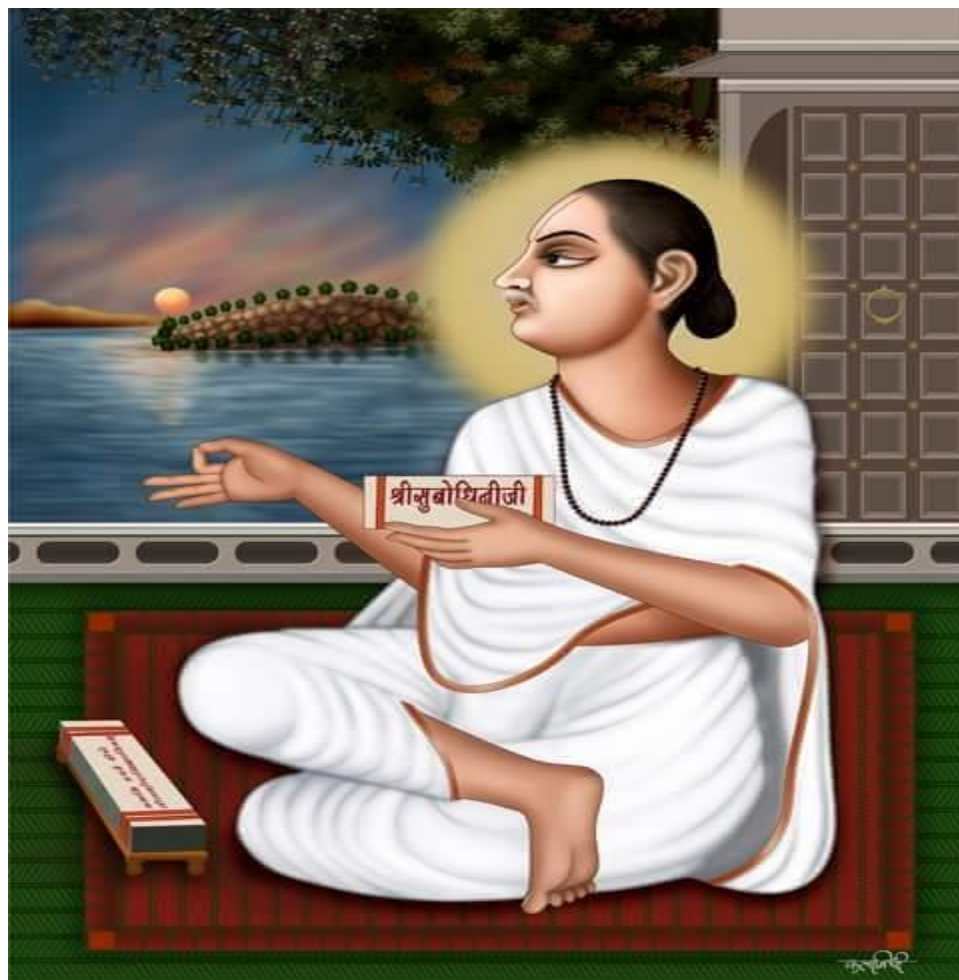
पुष्टि स्पर्श से मन जाग्यो तन ऊजळयो

सुधर्यो जन्म जन्म

वल्लभ स्पर्श से यमुना पायी गिरिराज धायो

सेवा स्पर्श से परब्रह्म पामयो भक्ति ठायो

नाथयो कली काल

पुष्टि प्रीत की रीत ऐसी बसे रज रज श्रीनाथ नाथ

" Vibrant Pushti "

"सर्वदा सर्व भावेन भजनीयो व्रजाधिप"

ओहह! "श्री वल्लभ! कितना सरल कह दिया है!

नहीं नहीं! यह सरल नहीं यह अति आवश्यक और गूढ है।

यदि हमारे सब आचार भगवान को अर्पण करने पर भी काम, क्रोध, अभिमान, अहंकार, ममता आदि मानसिक और शारीरिक भाव पीछा नहीं छोडते है, यह भाव भी भगवान को समर्पित करना चाहिए तब ही हमारी चित्त-वृत्ति का निरोध होता है।

यह सर्वे भाव केवल और केवल प्रीत के भाव से ही होगा। यह प्रीति की अभिव्यक्ति चार प्रकार से होती है। यही चार प्रकार के भाव को भक्ति में परिवर्तित याने नाम करण किया है, जो मानव जीवन को योग्य कर सके। यह कर्तव्य शिल और शुद्ध भाव है जो मानव जन्म ले कर मृत्यु परं तक यह भाव सदा रहना चाहिए।

तब ही

"सर्वदा सर्व भावेन भजनीयो व्रजाधिप"

श्री वल्लभ" अति आवश्यक और गूढ रहस्य जता रहे है।

श्री प्रभु प्रत्ये याने जीवन में अपने माता पिता प्रत्ये

"श्री प्रभु मेरे माता पिता है - स्वामी है और मैं उनका आज्ञाकारी पुत्र याने दास हूँ। यह दास्य भाव - दास्य प्रीति - दास्य भक्ति।

श्री प्रभु मेरे आमोद प्रमोद - सुखदु:ख में मेरा साथी है। वह मेरे परम मित्र है - बंधु है जो मेरे हर योग्य अयोग्य परिस्थिति में सदा मेरे निकट है - जो सदा मुझे योग्यता प्रदान करेंगे - यही भाव मैं सदा समाज के हर जीव तत्व के लिए जगाऊँगा तो समाज के हर पहलू में सख्यता जागेगी - यही ही योग्य सख्य भाव है - सख्य प्रीत है - सख्य भक्ति है।

क्रमश आगे कल.......

श्री कुंभनदासजी अति विशुद्ध और सैद्धांतिक पुष्टि सेवक थे। वह हर क्षण अपना जीवन श्री वल्लभाचार्यजी क सिद्धांत और मार्गदर्शन पर करते रहते थे।

कुटुंब का निर्वाह और पुष्टि सिद्धांत से जीना उनकी प्राथमिकता थी।

वह सदा ध्यान में रखते थे श्री वल्लभाचार्यजी का विचार और क्रिया की गति विधि जिससे उनसे कोई दोष या कोई असैध्दांतिक क्रिया जिससे अपने श्री गुरुपरंब्रहम को अशुद्धता स्पर्शे।

जब जब भी सत्संग या भागवत कथा होती वह सर्वत्र ख्याल रखते।

एक बार गाँव से आया एक व्यक्ति सत्संग में बैठा था, और

उनके कर्ण से स्पर्शते हर अक्षर से वह रोमांचित होता था। धीरे धीरे वह इतना ऐकाग्र हो गया श्री वल्लभाचार्यजी की वाणी से की वह आंतरिक और बाह्यता से विशुद्ध होता चला। कुंभनदासजी तो यह व्यक्ति की लीला देख कर अति आनंद की अनुभूति करने लगे।

थोडा समय बाद कथा विश्राम हुई वह व्यक्ति अपने घर चल पडा। कुंभनदासजी उनकी लीला में मग्न थे।

दूसरे दिन कुंभनदासजी सुबह सुबह उनके घर पहुंचे तो वह व्यक्ति अगले दिन के सत्संग रीत से गृहसेवा कर रहा था। कुंभनदासजी अचंबित हो गये, मुख से पुकार उठे - "श्री वल्लभ"

फिर वह व्यक्ति जो सेवा कर रहा था उन्हें निहारने लगे।

वह कभी श्री प्रभु को स्नान करा रहा था, कभी सामग्री धरा रहा था, कभी हस्त में रखकर नाँच रहा था तो कभी जल पीला रहा था, तो कभी सामने रखकर टुकुर टुकुर देख रहा था।

कुंभनदासजी सोचने लगे यह क्या कर रहा है? सेवा करता है या श्री प्रभुको कष्ट पहूंचा रहा है? सेवा पद्धति का ख्याल नहीं है तो सेवा किसीको पूछ कर करनी चाहिए?

सोचा - हम ही उन्हें शिखाते है।

तुरंत उनके पास पहुंच कर उन्हें सेवा रीत बताने लगे। वह व्यक्ति एक चित्त से समझ रहा था, देख रहा था पर उनके मुख पर कोई आनंद या समझने का प्रतिभाव नहीं था। कुंभनदासजी ने उन्हें समझा कर अपने घर पहुंचे।

प्रसाद ग्रहण करके वह श्री वल्लभाचार्यजी के सत्संग में पहूँचे तो देखा वह व्यक्ति उनसे पहले आकर बिराजमान था।

कुंभनदासजी ने देखा आज उनका मुखडा कुछ उदास और खोया खोया था। इतने में श्री वल्लभाचार्यजी पधारे।

सबने वंदन किया और "श्रीवल्लभ" आज्ञा से सब बैठ गए। सत्संग का आरंभ करने की शुरुआत करते ही श्री वल्लभाचार्यजी की नजर वह व्यक्ति पर आयी।

ओहहह! अचंबित हो गये! क्यूँ ऐसा हुआ? तुरंत कुभंनदासजी पर नजर पहूँची और सब समझ गये।

कुंभना! सेवा कोई रीत नहीं है, सेवा कोई व्यवहार नहीं है, सेवा कोई फरज नहीं है, सेवा कोई प्रणाली नहीं है, सेवा कोई सलाह सूचन नहीं है, सेवा कोई तफावत नहीं है, सेवा कोई ऐसी या सेवा कोई वैसी नहीं है।

सेवा तो एक शिक्षा है,

सेवा तो एक संस्कार है,

सेवा तो एक भाव है,

सेवा तो एक ज्ञान है,

सेवा तो जीवन जीने की कला है,

सेवा तो अपनी माधुर्यता जगाने का स्पंदन है,

सेवा तो एक आंतरिक ऊर्जा जगाने का व्यायाम है,

सेवा तो प्रीत है,

सेवा तो गीत है,

सेवा तो जीवन रथ है,

सेवा तो विशुद्धता जगाने की रीत है,

सेवा तो अलौकिक आनंद है,

सेवा तो जगत को एकात्म करने का साधन है।

"सर्वदा सर्व भावेन भजनीयो व्रजाधिप"

"श्री वल्लभाचार्यजी" ने अति आवश्यक और सूक्ष्मता से यह समझ जगायी है की हमारा जीवन सदा उत्कृष्ट हो।

ज्ञान और भक्ति की जो समझ कर रहे है वह मानव जीवन के लिए सर्वोत्तम है। दास्य भक्ति - सख्य भक्ति की रीत हमें स्पर्शायी अब क्रमश आगे -

वात्सल्य भक्ति - श्री प्रभु हमारी संस्कृति प्रमाणित प्रथम बाल स्वरुप है। "श्री वल्लभाचार्यजी" ने बाल स्वरूप से ही पुष्टि मार्ग विजयी किया है। क्यूँ?

हमारी संस्कृति में हर बालक श्री प्रभु समकक्ष है। क्यूँकी

बालक निर्दोष है।

बालक सरल है।

बालक निर्मल है।

बालक समातंर है।

बालक न्योछावर है।

बालक निष्कपट है।

बालक निर्लेप है।

बालक एक ही समझ - एक ही भाषा - एक ही प्रीत रीत - केवल समान्य याने सर्व मान्य।

केवल आनंद!

न द्वेष - न स्वार्थ - न रमत - न असंतुष्ट

केवल मासूमता!

हर उर्मिओं में प्यार

हर अदा में एकरार

हर लीला में मधुरता

हर स्पर्श में दुलार

हर पुकार में एतबार

हे माँ!

हे तात!

धात्री - ध्राता

और बालक

माता पिता की हर तीव्रता को संपन्न करना - विशुद्ध करना - दोष रहित करना

यही वात्सल्य है।

जगत के हर बालक को सिंचना

जगत के हर बालक को संस्कृत करना

जगत के हर बालक को समद्रष्टी निहारना

जगत के हर बालक को संरक्षण देना

जगत के हर बालक को तृप्त करना

जगत के हर बालक में श्री प्रभु निहालना

जगत के हर बालक को प्यार बाँटना

जगत के हर बालक को शिस्तता से संवारना

माँ! मेरी माँ! मेरी माँ!

तात! मेरे तात! मेरे तात!

यह वात्सल्य प्रीत है।

यह वात्सल्य भक्ति है।

"Vibrant Pushti"
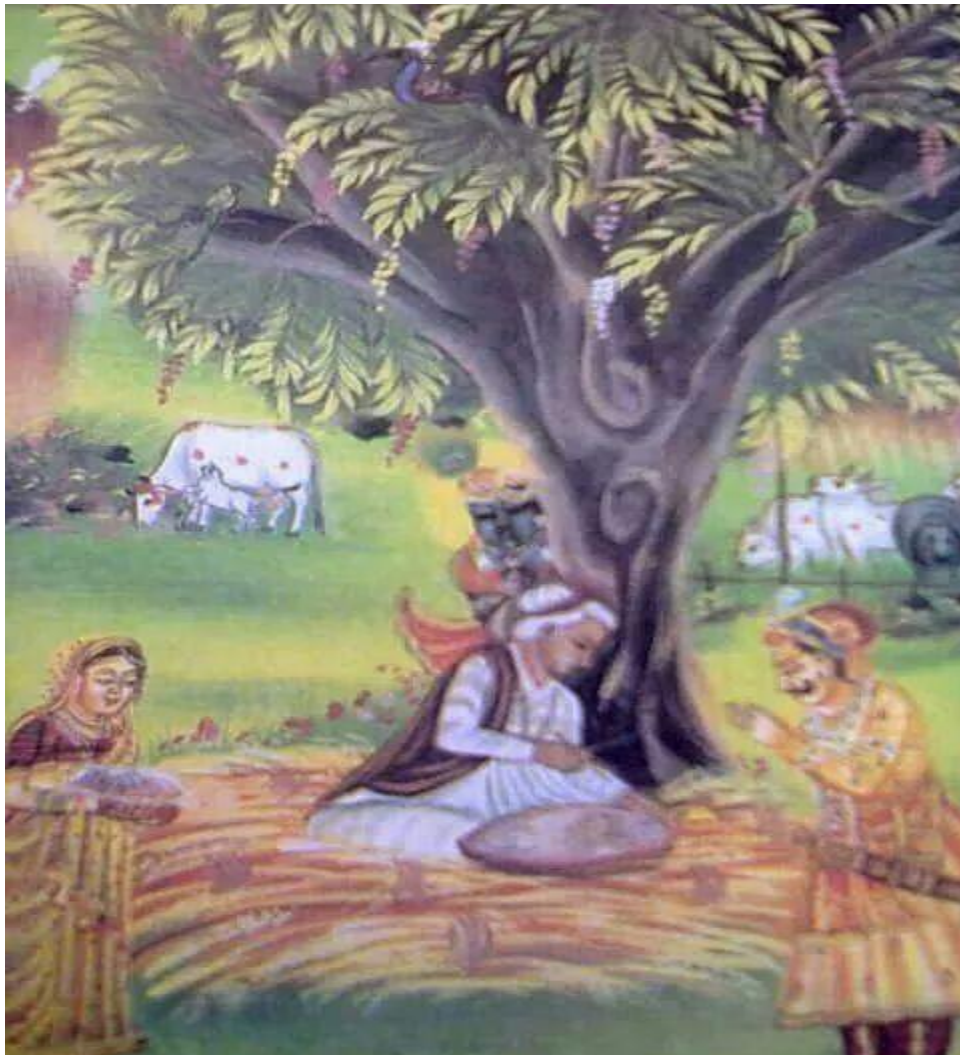
मेरा प्यार! यह सिर्फ अपने दिल में ही धरना!

"परम प्रिय श्री वल्लभ" प्राकट्य दिन

सच कहे तो हमें संकल्प करके जीवन जीते जीते एक विशुद्ध, पवित्र, सुंदर कार्य करने का दिन।

प्रथम तो मैं खुद जीव तत्व पुष्टि मार्ग" श्री वल्लभ" संप्रदाय में जन्म धारण किया है तो "पुष्टि मार्ग" को समझ कर "पुष्टि राह" को शुद्ध करने का संकल्प करके मेरे परम प्रिय श्री गुरु के चरण में मेरी आत्मीय न्योछावरता।

दूजा - मेरी द्रष्टि को शुद्ध करके मेरी नजर में आते हर स्थल, हर अंधश्रद्धा सभर अयोग्य प्रणाली को दूर करना।

तीसरा - हमारे पुष्टि रीत को व्यापार बनाया है उनमें न साथ सहकार - चाहे कितना भी वडिलों या संप्रदाय में कैसे भी स्थान पर हो, हमें योग्य करना है और रहना है।

चौथा - हमें उन्हें ही योग्य समझना है जो "श्री वल्लभ" के सिद्धांत से खुद जीते है - उन्हें नही समझना है जो खुद वल्वभ हो कर हमें गुमराह करते है।

पाँचवाँ - हमें हर साँस से पुष्टि सिद्धांत शिक्षा पानी ही है और यही शिक्षा से नित्य नित्य हमें हमारा जीवन कृतार्थ करना ही है।

"Vibrant Pushti"

गोकुल घाट आये प्रभु

गोकुल घाट पधारे वल्लभ

रचायी लीला जगत जीव की

प्रकटाये संस्कार जगत जीवन का

संताप जाग्यो जगत जीवन से

विरह बरसायो जगत आने को

न चैन नहीं चित्त न नींद नहीं नैन

संकल्प धर्यो जगत जीव उद्धार

प्रकट्या गोविंद घाट प्रभु

रीत जगत जीव जागृत को

विनंती कहीं वल्लभने ब्रह्म संबंध की

जतायी पुष्टि रीत जगत जीव की

हम जताये पुष्टि सिद्धांत जीवन

सत्य यही है जो गोकुल घाट सोहाय

सत्य यही है जो गोकुल स्पर्श रोम रोम समाय

"Vibrant Pushti"
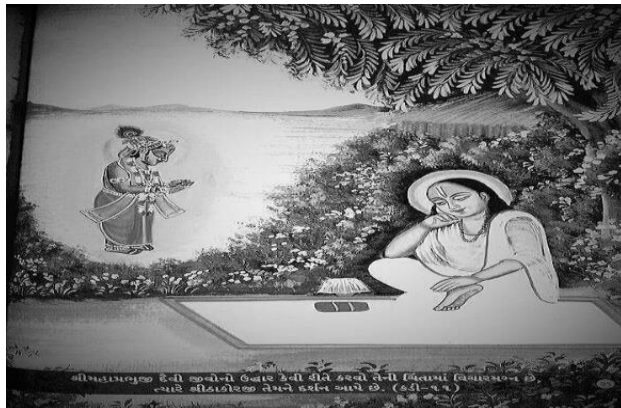
मन में बसाने गोवर्धन मैं पहूँचा जतीपुरा

तन में बसाने गोवर्धन मैं पहूँचा जतीपुरा

जीवन में बसाने गोवर्धन मैं पहूँचा जतीपुरा

मुखारविंद दर्शन पाया तन मन दंडवत किया

एक एक डग भर कर गोवर्धन परिक्रमा किया

गिरिराज धरण प्रभु तुम्हारे शरण

श्री वल्लभ चरण जीवन तुझे ही अर्पण

व्रज रज वरण आत्म तुझे हक समर्पण

अष्टाक्षर स्मरण "जय श्री कृष्ण" शरण

"Vibrant Pushti"

अंतर में बिराजे है "श्री वल्लभ"

इंतजार रहता है आपके सत्संग का

मन में मचलते है "श्री वल्लभ"

इंतजार रहता है आपके स्मरण का

तन में थिरकते है "श्री वल्लभ"

इंतजार रहता है आपके चरण स्पर्श का

चित्त में बसे हो "श्री वल्लभ"

इंतजार रहता है आपकी पुष्टि शिक्षा का

धन में विचरते हो "श्री वल्लभ"

इंतजार रहता है आपकी सेवा का

कैसा है यह वियोग

कैसा है यह संयोग

कैसा है यह योग

क्षण क्षण विरह में जागते है "श्री वल्लभ"

"Vibrant Pushti"

आपने कहा

कर्ण ने स्वीकार किया

कर्णधार जाग उठे

"जय श्री कृष्ण"

इन्होंने कहा

नयन ने स्वीकार किया

कमल नयन खिल उठे।

"जय श्री कृष्ण"

उन्होंने कहा

मुखडा ने स्वीकार किया

सूरजमुखी मलक उठे।

"जय श्री कृष्ण"

तुमने कहा

अधर ने स्वीकार किया

अधर होठ पुकार उठे।

"जय श्री कृष्ण"

किसीने कहा

मन ने स्वीकार किया

मन कृष्ण खेलने लगा।

"जय श्री कृष्ण"

काल ने कहा

तन ने स्वीकार किया

तन कृष्ण कृष्ण नाचने लगा।

"जय श्री कृष्ण"

दिशा ने कहा

आत्म ने स्वीकार किया

आत्म कृष्ण रस पीने लगा।

"जय श्री कृष्ण"

चारों ओर गूँज उठा

मेरे सारे तत्व ने स्वीकार किया

सारे तत्व कृष्ण प्रीत जगाने लगा।

"Vibrant Pushti"
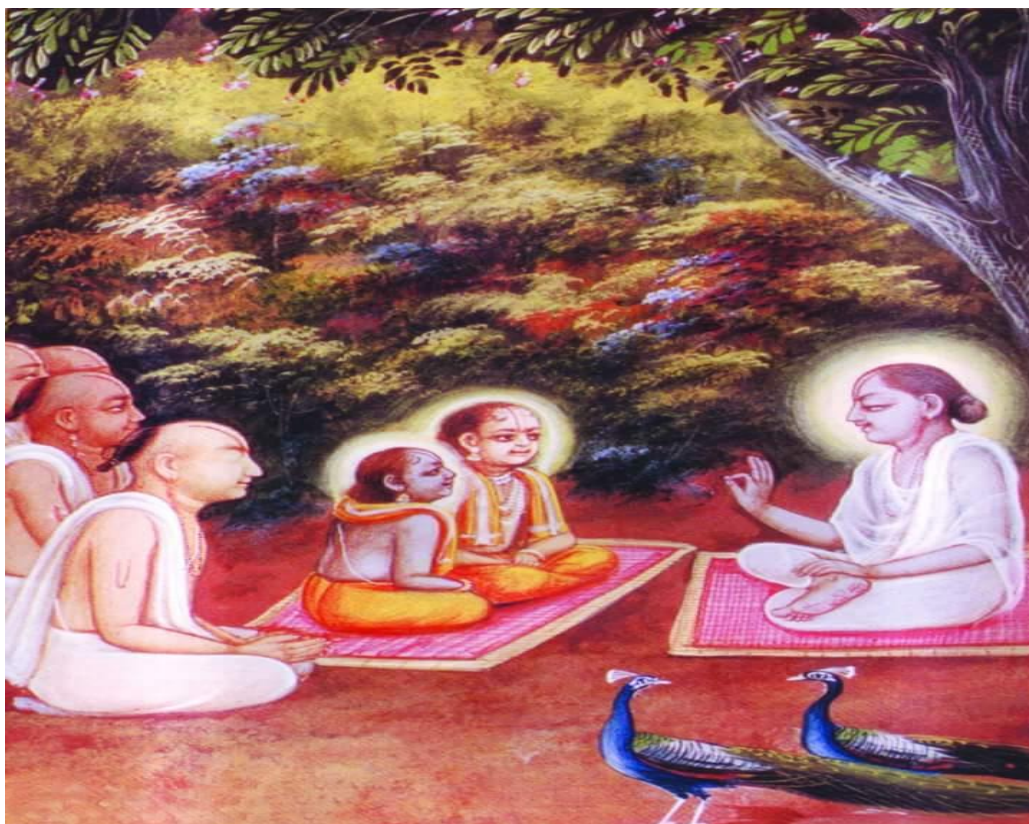
"भक्ति" कैसे समझे?

"भक्ति" कैसे जगाये?

"भक्ति" की अनुभूति कैसे करें?

कान्हा प्रीत भाव का प्रतीक है या परब्रह्म का प्रतीक है?

किताब पढा, प्रवचन सुना, हर सत्संग का भावार्थ जाना पर हमारे मन को, हमारे तन को, हमारी प्रकृति को पहचान कर, हमारी शिक्षा और संस्कार को पहचान कर हम योग्य करते है? जिस तरह से एक सिपाही सबकुछ पढता है, शिक्षा पाता है, यही सर्वत्र का उपयोग खुद की और अपने देश की सुरक्षा के लिए करता है यही हमें भी करना है।

पर

सच कहें तो न खुद को सलामत नहीं रखते है तो औरौंके लिए तो क्या कर सकते है?

आज पुष्टि मार्ग की हालत क्यूँ ऐसी है?

आज हमने जो पुष्टि मार्ग अपनाया है तो हम क्यूँ विश्वास से "श्री वल्लभ" के "श्री यमुना" के "श्री श्रीनाथजी" के नहीं है?

क्यूँकि हम सच्चे सिपाही नहीं है उनके सच्चे सेवक नहीं है।

पाठ करने से, नाटकीय सेवा करने से, धून या भजन गाने से, कोई एक छोटी सी समझ को खुद को बडा ज्ञानी समझलेना योग्य नहीं है।

जबतक खुद को योग्य नहीं करेंगे तबतक कुछ नहीं होगा।

हमारी जीवनशैली में हर पल अन्याश्रय करते है, हमारे विचार और क्रिया को बार बार परिवर्तन करते रहते है तो कैसे पायेंगे भक्ति और भगवान का मार्ग?

हमारे "अष्टसखा" मनुष्य जीवन की अलौकिक मिशाल है। हर पल "पुष्टि सिद्धांत" के सानिध्य में तो श्री वल्लभ" दोडके गये उनके द्वार! यही योग्यता है भक्ति और भगवान की। यही योग्यता है मनुष्य जीवन की।

हर एक मार्ग की कोई न कोई कृपा होगी, हर मार्ग योग्य ही होगा। हमें नहीं जानना है।

यह प्रथम विचार परिवर्तन की आवश्यकता है।

हमें केवल अपना, अपनों ने जो जन्म और धारण किया है और हमनें भी सही समझ के यह पुष्टि मार्ग में निरुपित हुए है। हमें प्रथम हमारी जागृतता केलवनी है। हमें हमारे "श्री वल्लभ" के सिद्धांत को अपने जीवन में कृतार्थ करने अपनाते जायेंगे हम अपनी सत्यता पहचानते जायेंगे।

हर पुष्टि विचार और क्रिया को सूक्ष्मता से जानिए और धीरे धीरे निरुपण करते जाना है।

प्राथमिक समझ तो हमें हमारे जन्म धारण से और माता पिता की जीवनशैली से मिले ही है और हम बार बार कथा, पुस्तकें, शास्त्र, प्रवचन, सत्संग से जुडते ही है। हर एक में से सूक्ष्मता तरास कर खुद में ही अपनाना है। यही प्रथम सीडी है पुष्टि मार्ग को पहचानने की, अपनाने की, केलवनी की।

"भक्ति"

भक्त > भगवान

और

भगवान > भक्त

भक्त + भाव + ज्ञान + भगवान = भक्ति

भगवान + भाव + ज्ञान + भक्त = भक्ति

मनुष्य जन्म से ही कितने भाव से जगत में आता है।

वात्सल्य भाव

सख्य भाव

माधुर्य भाव

हास्य भाव

शांत भाव

और

वृत्ति भाव।

यह वृत्ति में कहीं अनगिनत परिस्थिति का निरुपण है। कैसी कैसी परिस्थिति के परिणाम स्वरूप मनुष्य का जन्म होता है। यह परिस्थिति में जो जो भाव जागते है उसके मुताबिक मनुष्य का जन्म होता है। यही जन्म अनुसंधान उनके अंदर जागृत होते भाव का प्रकार से उनका भाव और ज्ञान का समन्वय से वह भगवान की तरफ गति करता है ऐसा उनका विश्वास और भाव द्रढ होता है उन्हें उनकी भक्ति कहते है।

अति आवश्यकता से समझना

"भक्ति"

अपनी संस्कृति के कहीं चरित्र, अपने संस्कृति के घडवैये कहीं ऋषियों,

अपनी संस्कृति के रचहिते कहीं आचार्यें ने भक्ति की व्याख्या, अर्थ, निरुपणता, सैद्धांतिकता अपनी अनुभूति और शुद्ध सत्य की पहचान से जतायी है - दर्शायी है।

भक्ति भाव + ज्ञान + अनुभूति + निस्वार्थ + निष्कपट + निष्काम + न्योछावर + निष्कंटक + निर्मल + निर्मोही और शरणागत हेतुक ही परमार्थि है, परम प्रेम रुपा, अमृत स्वरुपा है।

मनुष्य जगत में है तो उनमें कहीं न कहीं अंशे वात्सल्य, सख्य, माधुर्य, हास्य, और शांत गुण के साथ ही जन्म धारण करता है, जैसे जैसे समझता जाता है तब ही कहीं वृत्ति का जोडना होता है उसी प्रकार वह भक्ति की निरुपणता की कक्षा पाता है। भिन्न भिन्न उपर बताये अंश की मात्रा से उनकी पहचान होती है।

यह सनातन है। हम भी यही अंश निरुपीत है ही पर हम कैसे समझे?

हम समझे हमारी विचारधारा से

हम समझे हमारी जीवनशैली से

हम समझे हमारी वृत्ति प्रवृत्ति से

हम समझे हमारी आंतरिक उर्जा से

हम समझे हमारी घटती जीवन परिस्थिति से

हम समझे हममें उजागर आत्मीय चेतना से

यह कोई और किसीके प्रामाणित नहीं है, यह केवल और केवल निज नित्य स्वरुप से ही योग्यता परखाती है।

हमारे अष्टसखा चारित्र्य यह निज नित्य स्वरुप अनुभूति है। यह चारित्र्य इतने रसात्मक है कि जब भी उनका स्मरण करे हममें वह रस का उदभव होता है। इससे बडा प्रमाण क्या चाहिए!

सच जगत की जो भी संस्कृति यह भक्ति निर्देशक है तो हमारी हिन्दु संस्कृति अपनी योग्यता सार्थक करती है।

मनुष्य के जीवन में भक्ति एक तादात्म्य गुण है और यही गुण से ही वह स्व की पहचान कर सकता है। वह श्री प्रभु की निरोध लीला समझ सकता है।

"Vibrant Pushti"

वल्लभ तेरे चरण पुष्टि प्रीत के संग

दिल में बसने दे

साथी यही सच्ची समझ

आत्म आत्म का मिलन

ख्यालों से होने दे

मिलेंगे कहीं कोई पल

यमुना के निकुंज तट पर

व्रज रज से रंगे

खेले गिरिराज तले

पिया ....

"Vibrant Pushti"

"काम" शास्त्रोंक्त अर्थ एक विषय।

विषय या ने विष जो सृष्टि को दुष्ट करता है, छिन्न भिन्न करता है। हर जीव तत्व का तत्व को नष्ट करता है, इसलिए काम को जहरीला, विषय उद्भोक्ता कहा है।

साधारणता से सोचे तो "काम" या ने क्रिया। जो क्रिया में पौरुषत्व नष्ट हो उसे काम कहते है। यह पौरुषत्व सृष्टि के हर जीव तत्व में होता है। स्त्री लिंग हो या पुरुष लिंग हो। शास्त्रों ने कहीं अनुभव से पहचाना है कि हर जीव तत्त्व में "काम" गुण है और यह गुण उनकी प्रकृति पर ज्यादा असर रहती है।

शास्त्रों के प्रमाणित स्त्री लिंग या ने स्त्री तत्व काम उद्दीपन है, उत्तेजित है, कामोपयोगी है।

पर मेरा मंतव्य है - यह अयोग्य बात है। स्त्री लिंग या स्त्री तत्व तो सृष्टि के सर्वोच्च और सर्वोत्तम तत्व है। पर पुरुष प्राधान्य जगत में उन्हें निमन्ता पर बिठाते है। यह यह जगत की गंभीर भूल है।

"काम" प्रेम का एक डग है यह डग में हम निज स्वार्थ का पोषण करे तो यह विष हो जाता है और यही विष हमें निम्नता और निंचता की ओर धकेलता है। स्त्री जीव और पुरुष जीव की कडी काम से जुडे पर यह काम में निस्वार्थता हो, पवित्रता हो, शुद्धता हो तो यह काम का निरूपण प्रेम में होता है, यही प्रेम को आत्म विस्मृति करदे तो यह सुयोग्य पुरुषार्थ है। काम को प्रेम में परिवर्तन करना या ने इन्द्रिय तृप्ति का त्याग कर परम प्रिय प्रीत रस जागृत करना यह काम विजयी है जो सदा मधुर सुधा उत्कंठ होती है, यह सुधा अखंड रहे तो यह पुरुषार्थ है।

गोपि प्रीत भाव और ज्ञान शुद्ध अनुराग है।

"निजेंद्रिय-सुख हेतु कामेर तात्पर्य,

कृष्ण-सुख तात्पर्य गोपि-भाव वर्य।

कृष्ण बिना और सब करि परित्याग,

कृष्ण-सुख हेतु करि शुद्ध अनुराग।।"

"श्री वल्लभाचार्यजी" यही सातत्य से कहते है अगर काम को पुरुषार्थ से परिवर्तन करदे तो काम शुद्ध और पवित्र हो जायेगा।

"यदि श्रीगोकुलाधीशो धृत: सर्वात्मना हृदि।

तत: किमपरं ब्रूहि लौकिकैवैॅदिकैरपि।।"

केवल और केवल श्रीगोकुलाधीशो न कोई ओर या ने पूर्णत समर्पणता, तन मन धन रुप यौवन लोक परलोक सब को श्रीगोकुलाधीशो अर्पण। तत् सुख सदा शरणम्।

कहीं दूर से परिभ्रमण करके

मुझ अबुध को बुद्ध जगाने

संसार जगत का भेद शिखाया

पुष्टि पथ पर चलना शिखाया

ब्रह्म संबंध का टीका लगाया

षोडश् ग्रंथ से संस्कार सिंचा

रोम रोम गिरिराज बसाया

अंग अंग यमुना निकुंज रचायी

बिराजाये मन आत्म सिंहासन पर

मधुर मधुर गीत गाये बंसी सूर पर

अष्टसखा नित कीर्तन सेवा करे

साँस साँस नित्य दर्शन आरती करे

नयनधन-मनधन-तनधन दंडवत प्रणाम करे

जीवन कृत कृत पुष्टि प्रीत रीत शरण धरे

"Vibrant Pushti"

धर्म - जो धारण करते है। हम इन्हें कैसे धारण करते है?

1. माता पिता के संस्कार और आचरण के साथ से
2. जीवन जीने की पद्धति से
3. समाज के रीति रिवाज से
4. प्राथमिक शिक्षा से
5. श्री गुरु की कृपा से
6. हमारे गत जन्मों से
7. हमारा खुद का द्रृड निर्धार संकल्प से
8. हमारी द्रृड विश्वास की अनुभूति से
9. हमारी मान्यताओं से

पर सच कहें तो धर्म हमारा खुद का द्रृड निर्धार संकल्प से

और

हमारी द्रृड विश्वास की अनुभूति से

और

हमारी प्राथमिक शिक्षा से

ही हम अपना धर्म धारण करते है, अपनाते है और खुद की गति, दिशा और पहचान घडते है।

यही धर्म है।

यही धर्म हमने अपना पुरुषार्थ से ही अपनाते है, जीते है और निभाते है। यह अपनाना, जीना और निभाना ही पुरुषार्थ है। यह पुरुषार्थ योग्यता से, शुद्धता से, अखंडता से, निर्मल, निर्मोही, निष्ठा, निडरता से सदा जागृत रखें और निभाये वहीं उत्तम पुरुषार्थ है। इसलिए "श्री वल्लभाचार्यजी" ने रचा है

"सर्वदा सर्वभावेन भजनीयो व्रजाधिप:।

स्वस्यायमेव धर्मो हि नान्य: क्वापि कदाचन।।"

कितना सरल और सत्य

स्वस्यायमेव - स्व या ने खुद स्याय - पुरुषार्थ, मेव - करना ही।

स्व संकल्प, स्व विचार, स्व क्रिया, स्व निर्धार, स्व संचालन, स्व निर्भर, स्व भाव, स्व ज्ञान, स्व चेतना जागृत। यह पुरुषार्थ ही हमें - "सर्वदा सर्वभावेन भजनीयो व्रजाधिप" हमारा पुष्टि प्रिये एकात्म कराते है।

"Vibrant Pushti"

"अर्थ" अर्थ के कहीं अर्थ होते है। हर अर्थ में निस्वार्थ, निस्संदेह, निष्कपट, निखालस, स्पष्ट, योग्य, सत्य, विश्वास पूर्वक, सिद्धांत और संस्कार में परिवर्तित हो जाये वह अर्थ पुरुषार्थ हो जाता है।

स्व का ही परिक्षण करना हम बहुत कुछ समझ सकते है, पा सकते है और संस्कृति रच सकते है।

मनुष्य जीवन का मुख्य उद्देश्य ही यही है की हर अर्थ का योग्यता से हर योग में योगदान करना।

हम ने अर्थ का ऐसा अर्थ कर दिया है कि हर कोई बस यही अर्थ के पीछे लगा रहे चाहे

न मनुष्य जानते है

न कुल जानते है

न शिक्षा जानते है

न संस्कार जानते है

न माता पिता जानते है

न मित्रता जानते है

न धर्म जानते है

न कर्म जानते है

न जीवन जानते है

न सेवा जानते है।

बस यही जानते है जो तेरा है वह मेरा ही है।

जो तेरे पास है वह मुझे चाहिए।

यही ही रीत हम निभाते है।

नहीं नहीं!

"श्री वल्लभाचार्यजी" ने योग्य और शुद्धता से कहा है और दर्शाया है।

"एवं सदा स्म कर्तव्यं स्वयमेव करिष्यति।

प्रभु सर्वसमर्थो हि ततो निश्चिन्ततां व्रजेत।।

मनुष्य का हर विचार, हर क्रिया, हर आशा, हर अभिलाषा करता है वह उनकी परिस्थिति अनुरूप हो सकती है - करता है पर यही विचार, यही क्रिया, यही आशा, और यही अभिलाषा केवल और केवल भक्ति सिद्धांत से करे, श्री प्रभु पहचान कर करे, जगत के हर तत्व का योग्यता का ख्याल रख के करे तो यह अर्थ समर्पित हो जाता है।

हमारे परम प्रिय प्रीत निरोधी "श्री कृष्ण चरित्र"

हमारे परम प्रिय आचार्य "श्री वल्लभाचार्यजी" का चरित्र

हमारे अष्टसखा चरित्र

जिनका हर अर्थ न्योछावर है।

जिनका हर अर्थ समर्पण है।

जिनका हर अर्थ केवल यही ज्ञान और भाव से है

"प्रभु सर्वसमर्थो हि ततो निश्चिन्ततां व्रजेत।।"

प्रभु तु ही सर्व समर्थ है, तु ही जो कराये हम करेंगे, यही सत्य है और निश्चिंत है।

पर

सच क्या है?

मैं ही कर्ता हर्ता हूँ, मैं करु वहीं सत्य तो यह अर्थ का परिणाम विपरीत हो गया, और न हम रहे न हमारा धर्म, न हमारा जीवन, न हमारी संस्कृति।

अर्थ का अनेक अर्थ हो गये

हम बिछडते गये स्व से स्व

हम लूटते गये हम से हमारे

हम भेद में रह गये मैं मैं के

"Vibrant Pushti"
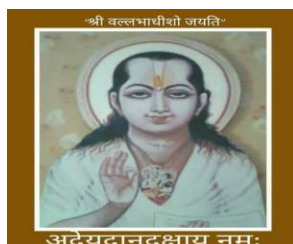
"श्री वल्लभाचार्यजी" ने यह जगत को कितनी रीति और कितनी पद्धति से जोडा है, जगाया है, आनंद करने की प्रणाली जतायी है।

"ब्रह्म संबंध"

"सेवा पद्धति"

"कीर्तन पद्धति"

"ब्रह्म संबंध"

"ब्रह्म"

ब्रह्म का अर्थ,

ब्रह्म की समझ,

ब्रह्म की पहचान,

ब्रह्म का स्पर्श,

यह शिक्षा पानी अति आवश्यक है। यह असाधारण है असामान्य है। आज जिस तरह से जो रीत या पद्धति अपनायी है वह कितनी योग्य है?

क्या हम ब्रह्म संबंध करते है?

क्या ब्रह्म संबंध लिया या दिया जाता है?

हमें हर एक को सोचना है और उनकी योग्यता पानी ही चाहिए, तब ही हम अपने वंशज, अपनी निष्ठा, अपना विश्वास और अपना कर्तुत्व को पहचान पायेंगे।

हम प्रवचन सुनते है,

हम सत्संग करते है,

पर हम जिज्ञासा नहीं करते है।

हम प्रश्न नहीं करते है।

हम योग्यता से पुष्टि सिद्धांत को समझते नहीं है।

क्यूँ?

दोष लगता है।

पाप लगता है।

मूर्ख समझेंगे।

नहीं नहीं! न समझने से सबकुछ लगता है।

मेरा खुद का मंतव्य

"श्री गुंसाईजी" रचीत "श्री सर्वोत्तम स्त्रोत" यह कोई पाठ नहीं है पर "श्री वल्लभाचार्यजी" चरित्र है। यह स्त्रोत में "श्री वल्लभाचार्यजी" के मनुष्य लीला का गुणगान और सार्थकता और सामर्थ्यता दर्शायी है। जिसने भी यह पाठ की प्रणाली में ढांचा है उनका अर्थ यह था कि जो भी व्यक्ति "श्री सर्वोत्तम स्त्रोत" नु अध्ययन करे तो हर अक्षर और शब्द और रचना की गहराई समझे और अपना जीवन कृतकृतार्थ करें। इसलिए जितनी बार उनका गान करे उतनी द्रूडता बढती जाय।

35 × 3 + 3 = 108 यह कोई नियम नहीं है।

सच समझना यह नियम से गान करने से "श्री वल्लभाचार्यजी" के जीवन चरित्र का प्रभाव हम पर पडता है? "श्री वल्लभाचार्यजी चरित्र" पहचान कर हम पुष्टि सिद्धांत अपनाते है?

यह नकारात्मक की बात नहीं है केवल जागृतता की बात है।

"श्री सर्वोत्तम स्त्रोत" का हर अक्षर अलौकिक और पुष्टि मय है। हर अक्षर का स्पर्श जीवन पुष्टि सिचंन सभर है। हर शब्द ज्ञान और भाव से भरा है। हर कारिका हमें भक्ति का रहस्य प्रदान करती है, हमें श्री कृष्ण रस में डूबोती है।

पुष्टि मार्ग का सातत्य और सामर्थ्य यही स्त्रोत में है।

इसलिए बार बार गान करने से हमारी जीवन शैली योग्य और समृद्ध बने।

अति सूक्ष्मता भरी है यह स्त्रोत में जो सूक्ष्मता हमें पुष्टि संस्कार कराती है।

"Vibrant Pushti"

कैसे कैसे दरश पठायो छू कर व्रज रज

गोवर्धन ने मुख लपटायो माखन मिसरी गोल कर

गिरिराज ने पुष्टि पथ दरशायो डग डग चल कर

बरसाना ने रंग उडायो गली गली प्रितम अंग बसायो

वृंदावन ने बूँद बूँद बरसायो प्रीत रंग नहायो

मथुरा ने यमुना पान धरायो अंतर मन शुधायो

गोकुल ने जपायो अष्टाक्षर मंत्र ब्रह्म संबंध बंधायो

ऐसी लीला पायी तन मन धन ने पंखी सुनाये पशु गाये

मेरे घर पुष्टि परम जीव पधारयो।

"Vibrant Pushti"
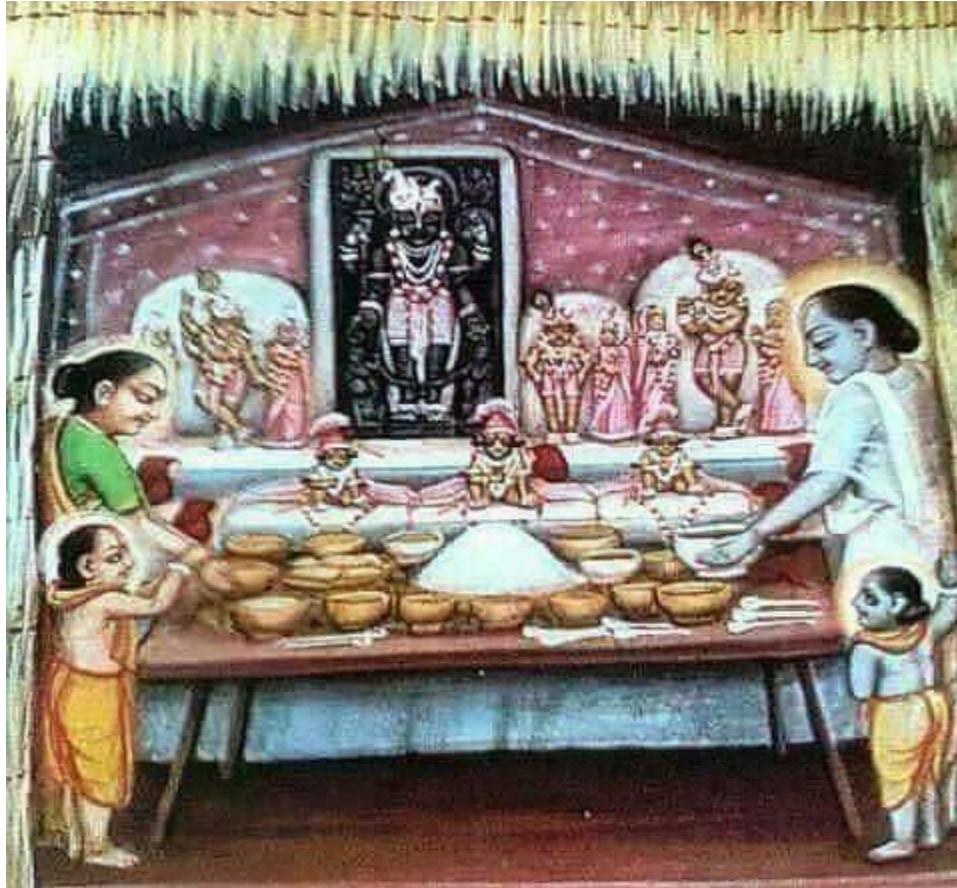
"संकल्प"

एक व्यक्ति था, जो हर आर्थिक, सामाजिक से समृद्ध था। उनका जन्म जैन धर्म कुल में हुआ था।

(एक ताकीद करदे की जो कह रहा हूँ वह धर्म संप्रदाय आधारित नहीं है केवल "संकल्प" का माहात्म्य के लिए ही समझना है)

एक दिन वह अपने रास्ते से घर पहूँच रहा था, थोडी ही दूर चलते चलते उन्हें एक व्यक्ति मिला। थोडी बातचीत में वह व्यक्ति ने कहा - भाई! बूरा न लगाना पर तुम धर्म भटक गये हो, तुम्हारा जीवन यह रीत का ही होना चाहिए।

वह सोचते सोचते धर पहूँचा की यह क्यूँ? ऐसे रास्ते में किसीका कहना - क्या कोई संकेत है?

सोचते सोचते कहीं दिन कट गये पर जबभी अकेला रहता उन्हें वही बात का स्मरण हो जाता।

(यह अन्याश्रय के सूत्र से भी न समझना)

बार बार स्मरण से उन्होंने जैन धर्म को तिलांजलि अर्पित करके पुष्टि मार्ग अपनाने का संकल्प किया और जो व्यक्ति उनके गाँव पधारते उन्हें अपने संकल्प की बात करता रहता। पर न कोई उन्हें मार्गदर्शन करता। अब वह भटकने लगा। भटकते भटकते वह एक दिन गोकुल पहूँच गया। वहाँ वह पूछता पूछता "श्री महाप्रभुजी की बैठक" में आ पहुँचा कितने दिनों से भूखा प्यासा था, जो जो व्यक्ति वहां से पसार होता था उन्हें वह पूछता रहता था पर कोई इतना बता रहे थे - बैठे रहो! आपको अभी बुलायेंगे। ऐसे बैठते बैठते शाम हो गयी। वह वही भूखा प्यासा पर एक आशा के साथ बैठा रहा। जो भी जा रहा था उन्हें वह पूछता की मुझे आचार्यश्री मिलेंगे?

मैं जैन धरमी हूँ तो मुझे आचार्यश्री मिलेंगे?

उनकी जैन धर्म की बात सुन कर सब उनसे दूर चले जाते है।

इतने में एक व्यक्ति ने उन्हें कहा जाओ! अंदर बूला रहे है।

वह अति हर्ष के साथ अंदर पहूँचा और जो व्यक्ति सामने बिराज मान थी उनका तेज देख कर प्रभावित हो गया, विनंती करने लगा मुझे आपका शिष्य करदों।

बैठे हुए आचार्यश्री ने उन्हें कहा! आपको यह रीत को अंगीकार करने के लिए "ब्रह्म संबंध" से सिद्धांत सिंचन अपनाना पडेगा। वह व्यक्ति खुश हो गया और तुरंत ही वह आज्ञा सहर्ष स्वीकार किया। अपने आत्मीय तत्व से आचार्यश्री को सम्मति दे दी।

आचार्यश्री ने यह व्यक्ति के लिए "ब्रह्म संबंध" करने की अनुमति दे दी।

सेवक को आज्ञा करी इन्हें अपरस में स्नान करके यहाँ मेरे पास ले आवो।

थोडी देर बाद वह व्यक्ति आचार्यश्री के सामने पहूँच कर नम्रता से खडी रही। आचार्यश्री ने......

आचार्यश्री ने उन्हें "ब्रह्म संबंध" करवाया और "पुष्टि मार्ग" की दिक्षा प्रदान की और आज्ञा करी -

हे पुष्ट जन! आप जो भी आजतक अर्चन किया, जीवन निर्वाह किया, जन्म धारण से जो पाया वह मेरे लिए वर्जित है। यह पल से आपको केवल "पुष्टि मार्ग" के सिद्धांत से ही जीना है या ने अब खुद का और कुटुंब का निर्वाह केवल पुष्टि सेवा रीत से ही करना है।

वह व्यक्ति ने अपने कुटुंब और पत्नी को सहर्ष कहा आज से हम सब "पुष्टि मार्ग" के अनुचर है, हमें आज से यह आज्ञा का शिरोधार स्वीकार करके यह सबका त्याग करना है।

हमें यहां जो कुछ है उनपर का अधिकार छोड दिया है। हमारी द्रष्टि भी हमें यह "पुष्टि सिद्धांत" से शिक्षित करके और यहां के हर प्राणवायु का त्याग करके नयी तरह से सबकुछ जगाना है।

इसलिए सब त्याग करके बाहर निकल जाये.......

सब तुरंत ही बाहर आ गये जो भी था सर्वत्र त्याग कर दूर दूर चलने लगे - वह व्यक्ति ने कहा - यह जो कपडे पहने है उनका भी त्याग करना है पर पहले हम कुछ मेहनत करके कुछ अर्थोपार्जन करले बाद में नदी में स्नान और त्याग करके नये वस्त्र पहनकर आगे कुछ करेंगे.....

पास के गाँव पहूँच कर सबने कडी मेहनत करके जो पाया उनका सबके लिए वस्त्र ले कर नदी की ओर चल पडे।

आचार्यश्री का स्मरण करके स्नान किया और अष्टाक्षर मंत्र गूँजन करके तन मन को पवित्र करके नये वस्त्र पहनकर आगे बढने लगे।

सबके मन में उत्साह था, विश्वास था।

यह "संकल्प" की रीत है।

आगे तो क्या कहूँ!

ओहहह!

"पुष्टि मार्ग" में "श्री वल्लभाचार्यजी" ने जगत के जीव को तीन प्रकार में बाँट दिया है।

प्रवाह जीव

मर्यादा जीव

पुष्टि जीव

यह प्रकार

जीव की प्रकृति

जीव का स्वभाव

जीव की गति

पर निर्धारित है।

ऐसा न समझना की हम पुष्टि संप्रदाय के कुटुंब में जन्म धारण किया है तो हम पुष्टि है या हमारा कुटुंब पुष्टि है।

"पुष्टि मार्ग" का सही सिद्धांत जो "श्री वल्लभाचार्यजी" ने प्रस्थापित खुद के और अष्टसखा के चारित्र्य से परिणामीत किया है, नहीं के जात पात से।

हम सूक्ष्मता से "श्री वल्लभाचार्यजी" की हर रचना, हर पद्धति, हर रीत, हर सिद्धांत, हर व्याख्या, हर सूत्र, हर संस्कार का चिंतन करे तो हर विशुद्धता से हमें यही ज्ञान, भाव, अर्थ, संस्कृत जागृत होगा केवल पुष्टि सिद्धांत"।

आज न कोई कुल में, न कोई समाज में, न कोई कुटुंब में यह सिद्धांत की शुद्धता है।

न श्री वल्लभ है न कोई सिद्धांत है सबका खुद का सिद्धांत और सब का पुष्टि मार्ग।

तो हम कौनसे जीव है?

जितनी अधुरप है उनसे प्रमाणित करलो।

तो हम प्रवाही जीव है

तो हम मर्यादा जीव है

तो हम पुष्टि जीव है

नहीं पता।

तो हमें क्या करना चाहिए?

बैठकजी पहूँचे तो नहीं कोई सत्यता

हवेली पहूँचे तो नहीं कोई शुद्धता

सत्संग या प्रवचन में पहूँचे तो नहीं कोई सिद्धांतता

सब पुष्टि मार्ग प्रणेता।

कितना दुर्भाग्य है "पुष्टि मार्ग" की उच्चता, उत्तमता का!

जहाँ निहालो तो ....

"पुष्टि मार्ग" अष्टसखा से सिंचित हुआ है या ने परम भगवदिय वैष्णव से तो हम खुद ही जाग कर, खुद ही सिद्धांत अपनाकर, खुद ही संस्कृत हो कर "श्री वल्लभाचार्यजी" की प्राथमिक प्रणाली को क्यूँ न उजागर करके खुद को पुष्टि जीव में परिवर्तित करे।

यही योग्यता जगानी है।

"Vibrant Pushti"

"Symbol" Of "Pushti Marg"

Symbol या ने "प्रतिक"

"प्रतिक या ने चिन्ह या ने पहचान"

सत्य, शुद्ध, पवित्र, विश्वास से कहते है पुष्टि मार्ग का "Symbol"

"प्रतिक"

"चिन्ह"

"पहचान"

केवल और केवल "सेवा रीत" है।

सच कहें तो आज के जो भी "वल्लभ कुल" समझते है उन्हें जागृत होना है। दिन ब दिन "पुष्टि मार्ग" की परिस्थिति जिस तरह से बह रही है वह शायद एक दिन "श्री वल्लाचार्यजी" के सिद्धांत से विमुख हो जा रही है।

हमें केवल "पुष्टि मार्ग" या ने "श्री वल्लभाचार्यजी" के सिद्धांत और शिक्षा से जो प्रज्वलित आत्म ज्योत का पार्दुभाव करना है तो ही हम "योग्य सेवक" "योग्य सखा" "योग्य कुल" होंगे।

नहीं तो!

न देखना है दुसरे संप्रदाय

न समझना है दुसरे धर्म की रीत

न कहना है दुसरे की करनी

"श्री वल्लभाचार्यजी" ने कभी नहीं कहाँ है की दुसरे की तरह जीवन संस्कृत करो क्यूँकि हमारा सिद्धांत है योग्य जीवन जीने के लिए और सत्य ज्ञान और पवित्र भाव जगाने के लिए।

हम जैसे जैसे अपने सिद्धांत पर अचल और अडग रहेंगे तो निश्चित ही हम न अन्याश्रय पायेंगे और न कहीं अन्य से दोषीत होंगे।

अहंता और अनन्यता की बात करने वालें क्या करते है?

हर सोच में अन्याश्रय

हर क्रिया में अन्याय

हर रीत में अनघडता

हर पद्धति में अलगता

हर प्रवचन में अलगावता

हम हमारी पहचान क्यूँ भूले?

हम हमारी संस्कृति क्यूँ तोडे?

हम हमारी रीत को क्यूँ छोडे?

हम हमारी प्रतिकता को क्यूँ नष्ट करें?

हम कभी न मिटने देंगे हमारा

"Symbol"

"प्रतिक"

"चिन्ह"

"पहचान"

"Vibrant Pushti"

"लीला" जब भी सुनते है या पढते है तन मन में एक सुरभि छा जाती है। हमारी संस्कृति में यह शब्द अति सरलता से समा गया है। जितनी सरलता से समा गया है इतना यह गहरा और सर्वोत्तम शब्द है।

"लीला" या ने सूक्ष्मता सभर भाव, ज्ञान और आनंद। हमारी हर एक क्रिया लीला से जोड कर ही रहती है अगर हम समझ गये तो भाव, ज्ञान और आनंद की ही अनुभूति करेंगे।

"श्री वल्लभाचार्यजी" ने अपनी हर रचना "लीला" संस्कृत करके हर रचना को शृंगार और सौंदर्य से अलंकृत कर दिया है। इसलिए तो हमें उनके हर अक्षर से भाव, ज्ञान और आनंद जागृत होता है।

"श्री वल्लभाधिशकी जय"

"Vibrant Pushti"

"दश लीला" हर एक व्यक्ति को समझनी आवश्यक है।

जीवन की हर क्षण यही लीला के स्पर्श से ही बितानी चाहिए। हर लीला का सातत्य ऐसा है की

तन वृंदावन हो जाये

मन गोपी हो जाये

धन व्रज रज हो जाये

आत्म कृष्ण हो जाये

प्रीत राधा हो जाये

यह दश लीला की हर सूक्ष्मता पाने से जीव जीवन - मन मुक्ति - तन तनुनवत्व - आत्म परमात्मा में परिवर्तन हो जाता है।

हमारी संस्कृति की धरोहरको श्री वल्लभाचार्यजीने पुष्टि सिद्धांत सिंचा है कि तन को गिरिराज करते है,

मन को मधुरा करते है और आत्म को यमुना करते है।

"अधिकार लीला"

"साधन लीला"

"सर्ग लीला"

"विसर्ग लीला"

"स्थान लीला"

"पोषण लीला"

"ऊति लीला"

"मनवन्तर लीला"

"इशानुकथा लीला"

"निरोध लीला"

"श्री प्रभु" हमसे खेलत है - हमें खिलावत है - हमें जगावत है - हमें प्रीत करते है - हमें खुद रचते है - हमें संस्कृत करते है - हमें शिक्षा देते है - हमें संवारते है - हमें संभालते है - हमें स्वतंत्र करते है - हमें आनंद करते है - हमें आनंद लूटाते है - हमें पुकारते है - हमें पुचकारते है - हमें कर्म करवाते है - हमें ज्ञान प्रदान करते है - हममे भक्ति जगाते है - हमें नाच नचाते है - हमारे अंदर सदा बिराजते है - हमें सलामत रखते है।

यही है लीला का रहस्य जो जीव से शिव और शिव से परब्रह्म की ओर गति कराते है और हमें खुद में समाते है।

"Vibrant Pushti"
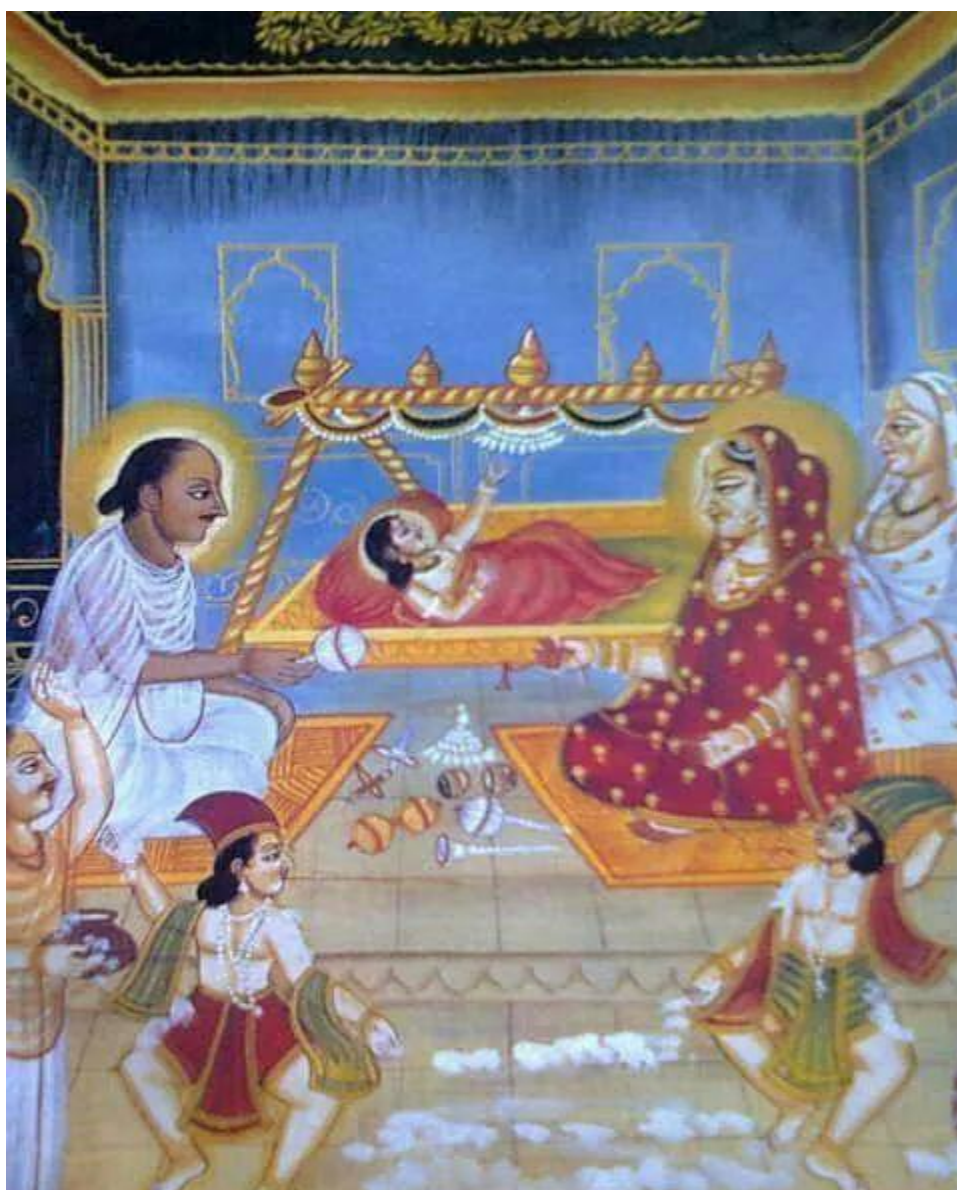
हमनें कहीं बार "श्री मद् भागवत" पढे

हमनें कहीं बार "श्री मद् भागवत" कथा श्रवण की

हमनें कहीं बार "श्री मद् भागवत" सत्संग प्रवचन सुने

कहीं बार किसीने "श्री मद् भागवत" कथा का गुणगान भी गाया है

कहीं बार किसीने "श्री मद् भागवत" की टीका भी लिखें है, कहे है, सुने है।

हम कहीं बार चौरासी बैठक के दर्शन और स्पर्श भी किये है

हम जानते ही होंगे "श्री मद् भागवत" का अर्थ

"श्री मद् भागवत" का अर्थ जानने से हम "श्री वल्लभाचार्यजी" को पहचान सकते है।

"पुष्टि मार्ग" में "श्री मद् भागवत" अति दुर्लभ संस्थापन सिद्धांत और साधन है।

हमारी विनंती है - कौन बतलाता है "श्री मद् भागवत" का अर्थ?

यह केवल हमारी जिज्ञासा है।

"श्री मद् भागवत" का अर्थ "श्री वल्लभाचार्यजी" ने अति सूक्ष्मता से कहा है, समझाया है।

"शास्त्रे स्कन्धे प्रकरणेऽध्याये वाक्ये पदेऽक्षरे।

एकार्थं सप्तधा जानन्नविरोधेन मुच्यते।।"

"श्री वल्लभाचार्यजी" ने "श्री मद् भागवत" का अर्थ इस सर्वोच्च रीत से प्रस्थापित और शिक्षित की है - शास्त्र, स्कन्ध, प्रकरण, वाक्य, पद और अक्षर - यह सातों से संस्कृत हुआ विवेचन निर्विरोध से एक ही हो। अर्थात "श्री मद् भागवत" के बारह स्कन्ध है और हर एक स्कन्ध का अर्थ एक ही हो।

कितनी उच्चता!

कितनी साक्षरता!

कितनी अलौकिकता!

कितनी स्पष्टता!

ऐसे अर्थ का संस्कृत होने से

न असमंजस

न अनिर्वचनीय

न अनिर्णित

न अनिश्चित

केवल सत्य अनुरूप!

"श्री मद् भागवत" का अर्थ

"आनन्दस्य हरेर्लीला शास्त्रोर्थो दशधा हि सा।

"अत्र सर्गो विसर्गश्च स्थानं पोषणभूतय: ।।

मन्वतरेशानुक था निरोधो मुक्तिराश्रय: "।

अधिकारी साधनानि द्वादशाथस्तितोऽय हि।।

निरुप्य संखया स्कन्धा द्वादशैव न चान्यथा।

तृतीयादिदशस्कन्धेर्लीला दशविधोदिता।।

श्रोतुर्वत्कुश्च लक्ष्माध्य द्वितीये त्वऽगंनिर्णय:।

इतींद द्वादशस्कन्धं पुराणं हरिरेव स।।

आनंदरुप श्री प्रभु अर्थात भगवान की आनंदमयी लीला दस प्रकार से शास्त्रार्थ है। यह लीला जगत की प्रकृति से उदभवते कष्ट को दूर करने वाली है। अर्थात लीला के पुरुषार्थ से प्रकृति के कष्ट को सुखरुप में परिवर्तन करता है यही "श्री मद् भागवत" का पूर्ण योग्य अर्थ है।

अदभुत!

अलौकिक!

सर्वोत्तम!

विशुद्ध!

स्पष्ट!

सत्य!

"Vibrant Pushti"

"भगवदनुग्रह"

हम जीव है जगत से जुड है और संसार में डूबे है। हमें योग्यता शिखाने, हमें संस्कृत करने हमारा धर्म और हमारा परम पूज्य श्री गुरूजी है।

"गुरु बिना ज्ञान न पाये

भक्ति बिना भाव न जागे

संस्कार बिना न संसार भागे

धर्म बिना न जीवन साजे"

"भगवदनुग्रह"

भगवद + अनुग्रह

भगवद का अर्थ क्या है?

भगवद क्या है?

भगवद क्यूँ है?

हमारे जीवन में भगवद का स्पर्श और आवरण क्यूँ महत्वपूर्ण है?

ऐसे कहीं जिज्ञासा का सिंचन "श्री गुरु" करते है।

यह गुरु का स्पर्श, गुरु का सानिध्य, गुरु की स्पष्टता, गुरु का सामीप्य, गुरु की पहचान, गुरु की सत्यता, गुरु की सातत्या, गुरु का सामर्थ्य, गुरु का सन्मान, गुरु की शरणागत कैसे समझा और पाया जाय?

"श्री वल्लभाचार्यजी" के षोड्शग्रंथो का अध्ययन, प्रवचन, वांचन और गान करने से गुरु नहीं कह जाते और समझ नहीं जाते?

समाज को ऐसे ध्रुवीकरण से बांधे नहीं जाते और प्रस्थापित नहीं किये जाते की

यह यह कुल के है तो गुरु है?

"श्री वल्लभाचार्यजी" के चरित्र से, सिद्धांत से, पुष्टि रीत से, षोड्शग्रंथो की सूक्ष्मता से खुद को योग्य करे और जीवन चरित्र सार्थक करे तो "श्री गुरु" बाकी तो अन्याश्रय।

"श्री गुरु" सर्वोच्च, सर्वोत्तम, सुचरित्र, सदैव सेवा, पवित्र और शुद्ध चरित्र हो यह आत्म तत्व "श्री गुरु" है।

"श्री गुरु" अहंता ममता रहित हो।

"श्री गुरु" दीनता समता सभर हो।

"श्री गुरु" निर्मोही, निर्मल, निष्कपट, निष्ठा वान, निरोधक हो।

ऐसे आत्म तत्व से जीव का स्पर्श हमें "श्री गुरु" का सामीप्य और सानिध्य प्राप्त करके यह आत्म तत्व हमारा "श्री गुरु" स्थाने यथा योग्य है।

"भगवदनुग्रह" का पार्दुभाव यही "श्री गुरु" ही जगाते है।

"भगवदनुग्रह"

हम जीव है जगत से जुड है और संसार में डूबे है। हमें योग्यता शिखाने, हमें संस्कृत करने हमारा धर्म और हमारा परम पूज्य श्री गुरूजी है।

"गुरु बिना ज्ञान न पाये

भक्ति बिना भाव न जागे

संस्कार बिना न संसार भागे

धर्म बिना न जीवन साजे"

"भगवदनुग्रह"

भगवद + अनुग्रह

भगवद का अर्थ क्या है?

भगवद क्या है?

भगवद क्यूँ है?

हमारे जीवन में भगवद का स्पर्श और आवरण क्यूँ महत्वपूर्ण है?

ऐसे कहीं जिज्ञासा का सिंचन "श्री गुरु" करते है।

यह गुरु का स्पर्श, गुरु का सानिध्य, गुरु की स्पष्टता, गुरु का सामीप्य, गुरु की पहचान, गुरु की सत्यता, गुरु की सातत्या, गुरु का सामर्थ्य, गुरु का सन्मान, गुरु की शरणागत कैसे समझा और पाया जाय?

"श्री वल्लभाचार्यजी" के षोड्शग्रंथो का अध्ययन, प्रवचन, वांचन और गान करने से गुरु नहीं कह जाते और समझ नहीं जाते?

समाज को ऐसे ध्रुवीकरण से बांधे नहीं जाते और प्रस्थापित नहीं किये जाते की

यह यह कुल के है तो गुरु है?

"श्री वल्लभाचार्यजी" के चरित्र से, सिद्धांत से, पुष्टि रीत से, षोड्शग्रंथो की सूक्ष्मता से खुद को योग्य करे और जीवन चरित्र सार्थक करे तो "श्री गुरु" बाकी तो अन्याश्रय।

"श्री गुरु" सर्वोच्च, सर्वोतम, सुचरित्र, सदैव सेवा, पवित्र और शुद्ध चरित्र हो यह आत्म तत्व "श्री गुरु" है।

"श्री गुरु" अहंता ममता रहित हो।

"श्री गुरु" दीनता समता सभर हो।

"श्री गुरु" निर्मोही, निर्मल, निष्कपट, निष्ठा वान, निरोधक हो।

ऐसे आत्म तत्व से जीव का स्पर्श हमें "श्री गुरु" का सामीप्य और सानिध्य प्राप्त करके यह आत्म तत्व हमारा "श्री गुरु" स्थाने यथा योग्य है।

"भगवदनुग्रह" का पार्दुभाव यही "श्री गुरु" ही जगाते है।

"निष्काम"

जो काम में निस्वार्थ हो,

जो काम में सरलता हो,

जो काम में निष्कपट हो,

जो काम समदर्शी हो,

जो काम समांतर हो,

जो काम संतुष्ट हो,

जो काम समतुल्य हो,

जो काम समर्थ हो,

जो काम सत्य हो,

जो काम सैद्धांतिक हो,

जो काम सर्वोच्च हो,

जो काम न्यायिक हो,

जो काम निष्कलंक हो,

जो काम सकाम हो,

जो काम शुद्ध हो,

जो काम शुभ हो,

जो काम सुगंधमय हो,

जो काम निष्किंचन हो,

जो काम निष्कंटक हो,

जो काम सौंदर्यबोध हो,

जो काम ज्ञानवर्धक हो,

जो काम भक्ति सभर हो,

जो काम शरणागत हो,

जो काम अमृतमय हो,

जो काम प्रीत संपूर्ण हो।

इसे निष्काम कहते है।

यह निष्काम काम का अनुष्ठान तब ही हो शकता है

जब मन अविकारी हो

जब तन विशुद्ध हो

जब धन पवित्र हो

जब आत्म ढ्रड विश्वास सभर हो

जब काम का संकल्प श्री प्रभु स्पर्शी हो।

"श्री वल्लभाचार्यजी" ने जन्म धारण किया और खुद के कर्म से जन्म को प्राकट्य में परिवर्तन कर दिया।

कितनी सच्चाई है मानव जन्म की

कितनी उंचाई है मनुष्य जन्म की

कितनी तनुनवत्वता है आत्मीय तत्व की

कितनी साक्षरता है मनुष्य धर्म की

पुष्टि मार्ग की विशुद्धता और सामर्थ्यता और सत्यता यही चारित्र्य से ही है।

वंदन करते है "श्री वल्लभाचार्यजी" को

"श्री वल्लभाचार्यजी" का प्राकट्य क्यूँ हुआ?

यह विशिष्टता समझनी अति आवश्यक है।

"पुष्टि मार्ग" के प्रस्थापित का मुख्य उद्देश्य भी यही दर्शाता है।

"श्री सुबोधिनीजी" उनके जन्म का और जन्म से प्राकट्य का परिवर्तन का रहस्य दर्शाता है।

यही स्पर्श "पुष्टि मार्ग" का अस्तित्व का प्रारंभ करवाती है।

"अर्थ तस्य विवेचितुं नही विभुवैॅश्वानराद्वाक्पते

रन्यस्तत्र विधाय मानुषतनुं मां व्यासवत् श्री पति:।

दत्त्वाज्ञां च कृपावलोकनपटुयस्मादतोऽहं मुदा

गुढार्थ प्रकटीकरोमि बहुधा व्यासस्य विष्णो: प्रियम् ।।

"श्री व्यासजी" जिन्होंने "श्री मद् भागवत" की रचना की और खुद को "श्री विष्णुजी" के ज्ञानावतार का प्रार्दुभाव किया, उनके बाद ही "श्री वल्लभाचार्यजी" ने "श्री मद् भागवत" के अर्थ का विवेचन करने का सामर्थ्य "श्री वल्लभाचार्यजी" ने किया। यह विवेचन करने की वाणी केवल "श्री वल्लभाचार्यजी" ही समर्थ थे, जो वाणी के पति वैश्वानर या ने अखंडित ज्योति या ने अग्नि के सिवाय अन्य कोई समर्थ नहीं है। इसलिए ही "श्री वल्लभाचार्यजी" को वैश्वानर या ने अग्नि स्वरुप पहचानते है।

"श्री सुबोधिनीजी" ही "श्री मद् भागवत" का अदभुत, अलौकिक और अखंड विशुद्ध और गतिमय और तनुनवत्व स्वरुप है। यह विवेचन से "श्री वल्लभाचार्यजी" ने "पुष्टि मार्ग" को प्रस्थापित किया। हर सिद्धांत से सभर यह विवेचन सृष्टि के हर दिशा, हर सागर, हर ब्रहमांड में पुष्टि मार्ग का योग्य माहत्मय से आनंद का उदभव किया और सृष्टि, प्रकृति को आनंद स्वरुप का स्पर्श कराया।

"पुष्टि मार्ग" का स्पर्श पाने और जीवन सिंचन करने और जन्म को पुष्टि मार्ग से तनुनवत्व का तन और मन में संस्कार सिंचन करेगा

यही रहस्य है "श्री वल्लभाचार्यजी" के प्राकट्य का है।

"श्री वल्लभाचार्यजी" का प्राकट्य क्यूँ हुआ?

यह विशिष्टता समझनी अति आवश्यक है।

"पुष्टि मार्ग" के प्रस्थापित का मुख्य उद्देश्य भी यही दर्शाता है।

"श्री सुबोधिनीजी" उनके जन्म का और जन्म से प्राकट्य का परिवर्तन का रहस्य दर्शाता है।

यही स्पर्श "पुष्टि मार्ग" का अस्तित्व का प्रारंभ करवाती है।

"अर्थ तस्य विवेचितुं नही विभुवैॅश्वानराद्वाक्पते

रन्यस्तत्र विधाय मानुषतनुं मां व्यासवत् श्री पतिः।

दत्वाज्ञां च कृपावलोकनपटुयस्मादतोऽहं मुदा

गुढार्थ प्रकटीकरोमि बहुधा व्यासस्य विष्णोः प्रियम् ।।"

"श्री व्यासजी" जिन्होंने "श्री मद् भागवत" की रचना की और खुद को "श्री विष्णुजी" के ज्ञानावतार का प्रार्दुभाव किया, उनके बाद ही "श्री वल्लभाचार्यजी" ने "श्री मद् भागवत" के अर्थ का विवेचन करने का सामर्थ्य जगाया।

यह विवेचन करने की वाणी केवल "श्री वल्लभाचार्यजी" में ही सामर्थ्यता सभर थी, जो वाणी के पति वैश्वानर या ने अखंडित ज्योति या ने अग्नि के सिवाय अन्य कोई समर्थ नहीं है। इसलिए ही "श्री वल्लभाचार्यजी" को वैश्वानर या ने अग्नि स्वरुप पहचानते है।

"श्री सुबोधिनीजी" ही "श्री मद् भागवत" का अदभुत, अलौकिक, अखंड विशुद्ध और गतिमय तनुनवत्व स्वरुप है। यह विवेचन से "श्री वल्लभाचार्यजी" ने "पुष्टि मार्ग" को प्रस्थापित किया। हर सिद्धांत से सभर यह विवेचन सृष्टि की हर दिशा, हर सागर, हर आकाश, हर ब्रह्मांड में पुष्टि मार्ग की योग्य माहत्मयता से आनंद का उदभव किया और सृष्टि, प्रकृति को आनंद स्वरुप का स्पर्श करवाया।

"पुष्टि मार्ग" का स्पर्श पाने, जीवन में पुष्टि मार्ग सिंचन से तनुनवत्व का संचार तन और मन में जागता है और परब्रह्म आत्म में प्रकट होते है जिससे जन्म धन्य हो जाता है और जीव तत्व का परमात्मा में एकात्म हो जाता है।

यही रहस्य है "श्री वल्लभाचार्यजी" के प्राकट्य का है।

कहा है।

"वैश्वानर" कहा

"वाक्पति" कहा

पर

"पूर्ण पुरुषोत्तम" नहीं कहा

"श्री वल्लभ" "पूर्ण पुरुषोत्तम" नहीं है। उन्होंने ही हमें बताया है, दर्शाया है और शिखाया है।

"पूर्ण पुरुषोत्तम" केवल "श्री कृष्ण" है

"श्री वल्लभ" के कहीं स्वरुप है।

"वाक्पति"

"वैश्वानर"

"महाप्रभुजी"

"लक्ष्मण भट्ट जी के पुत्र"

"महालक्ष्मी पति"

"अग्नि"

यह सब स्वरूप है।

"Vibrant Pushti"
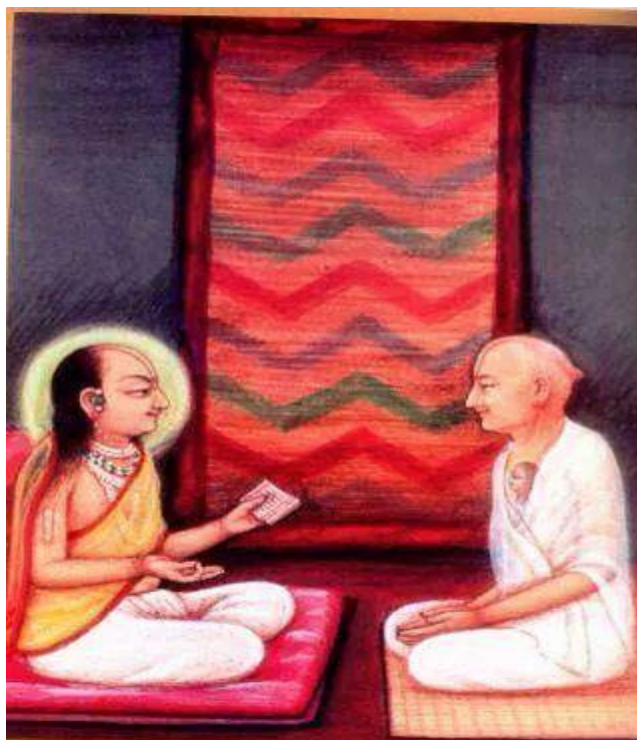
"सेवा" सेव् + अय = सेव्य + अ = सेवा।

सेव् = सुश्रुसा = शुद्धता, सर्वोत्तमता, सर्वोच्चता सभर विचार और क्रिया करना।

अय = खुद

अ = आंतरिक और बाह्य।

सेवा = जो विचार और क्रिया आंतरिक और बाह्यता से विशुद्ध, पवित्र, सर्वोत्तम, सर्वोच्च हो जिससे केवल और केवल ब्रह्म से परब्रह्म की ओर गति जागृत हो कर एकात्म तक सार्थक हो - सेवा उसे कहते है।

जो विचार और क्रिया निर्मल, निरोधक, निर्मोही, निष्कपट, निरंतर, नित्य नवनीत हो उसे सेवा कहते है।

जो विचार और क्रिया सरल, सुंदर, सुदेश्य, सत्य, सातत्य, सैध्दांतिक, सिद्ध, स्वतंत्र, समर्पण, संस्कार, संकर्षण, सलामत, शरणागत हो उसे सेवा कहते है।

जो विचार और क्रिया शृंगार, सर्जक, संचित, निधि, काल परिवर्तक, ज्ञानवर्धक, भावात्मक, प्रीत न्योछावर, आनंद प्राकट्यक हो उसे सेवा कहते है।

"Vibrant Pushti"

नित्य नित्य झांखी करके निहारु सुंदीर श्याम,

आत्म जगाऊ तन नचाऊ मन को शरण धरु।

हे गोविंद!

हे कन्हैया!

हे कृष्ण!

हे गोपाल!

हे केशव!

हे माधव!

हे गिरिधर!

हे मुरारी!

हे नटवर!

"मंगला" टहल सुनते ही कर्ण में मिलने की उमंग खिल जाती है।

"शृंगार" दर्शन करते ही नयन में विरह की बिजली कौंध जाती है।

"ग्वाल" शब्द पढते ही पैरों में गौ धूलि उड उड जाती है।

"राजभोग" मन सोचते ही अपने हस्थ से भाव आरोगायें ह्रदय अंकुर फूटते है।

"उत्थापन" बेला जागते ही रोम रोम में मिलने की अगन जागती है।

"आरती" विरह ताप से तन मन आत्म नख शिख आरत द्रवित होते है।

"संध्या" एक ही धून केवल ही केवल मिलन ही मिलन न कोई कुछ।

"शयन" चरण सेवा सीवा न कुछ चाहूँ।

"Vibrant Pushti"

"स्वरुप सेवा"

स्वरुप या ने स्व + रुप = स्वरुप।

स्व को पहचानने के लिए जो भी क्रिया करें उन्हें आध्यात्मिकता, आत्मीयता कहते है, और यही क्रिया से जो रुप का प्राकट्य होता है वह हमारा आत्म रुप, हमारा परमात्मा स्वरुप, जिसके हम अंश है वह अंशी स्वरुप का हमें स्पर्श होता है।

यह अंश से अंशी की ओर गति करने के लिए जो रीत है - पद्धति है उन्हें सेवा कहते है।

सरलता से समझे -

प्रथम चरण - स्व की पहचान के लिए हमें जो रीत अपनानी है वह रीत का आरंभ जगत में जन्म धारण करके प्रकृति से जोड कर हर तत्व की पहचान करके हर तत्व में से सत्य को जान कर अपना सत्य का उनसे समन्वय।

यह समन्वय के लिए हमें श्री वल्लभ ने जो सेवा सिद्धांत दर्शाये है उनका अभ्यास करके हमें अपने आप में प्रकाशित करना है। यह प्रकाशित करने के लिए ही "श्री कृष्ण" की सेवा रीत पद्धति को उजागर किया है। "श्री कृष्ण" का चरित्र या ने रुप से ही हम स्वरुप को पहचानेंगे। इसलिए जो पुष्टि सेवा रीत श्री वल्लभ ने हमें प्रदान की है वह सर्वोच्च और सर्वाधिक है। जितने यह सेवा से जुडते जायेंगे उतने ही हमें स्वरुप का ज्ञान और स्वरुप का भाव जागेगा। यही भक्ति है।

हमारे पुष्टि मार्ग में "श्री कृष्ण" स्वरुप को परब्रह्म स्वरुप से प्रतिष्ठित किया है। इसलिए "श्री कृष्ण" सेवा रीत "श्री कृष्ण लीला" रीत से शिक्षित सिंचित और निर्देशित है।

हम साकार "श्री कृष्ण" की सेवा से हम निर्गुण परब्रह्म को सगुण परब्रह्म से पहचान सके और हम इससे हमारा स्वरुप की पहचान कर सके। इसलिए स्वरुप सेवा की रीत पुष्टि मार्ग की अलौकिक रीत है।

"Vibrant Pushti"

कदम कदम साथ चलने से मार्ग और कदम पहचाने जाते है

हम भी हर कदम पुष्टि मार्ग पर चलने से पुष्टि मार्ग हमें और हम पुष्टि मार्ग को पहचान जाते है।

पर

हम जैसे कदम लडखडाये

हम जैसे कदम मुडाये

हम जैसे कदम ठुकराये

हम जैसे कदम कुदाये

हमारा ताल मेल तुट जाता है और हम भटक जाते है

ऐसा बार बार होने से

न हम रहते है

न पुष्टि मार्ग रहता है

हो जाता है भटका हुआ मार्ग।

हम ही कदम के निश्चयी है, निर्धारित है, सृजन है, सहयोगी है।

मार्ग ही सिद्धांत का कृतनिश्चयी है, संस्कृत सिंचन है, योग्य दिशा है।

कदम है तो मार्ग है - मार्ग है तो निशान है - निशान है तो दंड नायक है - नायक है तो मंजिल है।

हमारी धरोहर है पुष्टि मार्ग

हमारा कर्म है पुष्टि मार्ग

हमारा धर्म है पुष्टि मार्ग

हमारा जीवन है पुष्टि मार्ग

हमारा कर्तव्य है उन्हें निभाना

हमारा समर्पण है उन्हें संरक्षणना

हमारा आदर्श है उन्हें जीवंत रखना।

आवो मिलके कदम कदम बढाकर साथ साथ रहे सदा पुष्टि मार्ग प्रीत रीत पर।

"Vibrant Pushti"
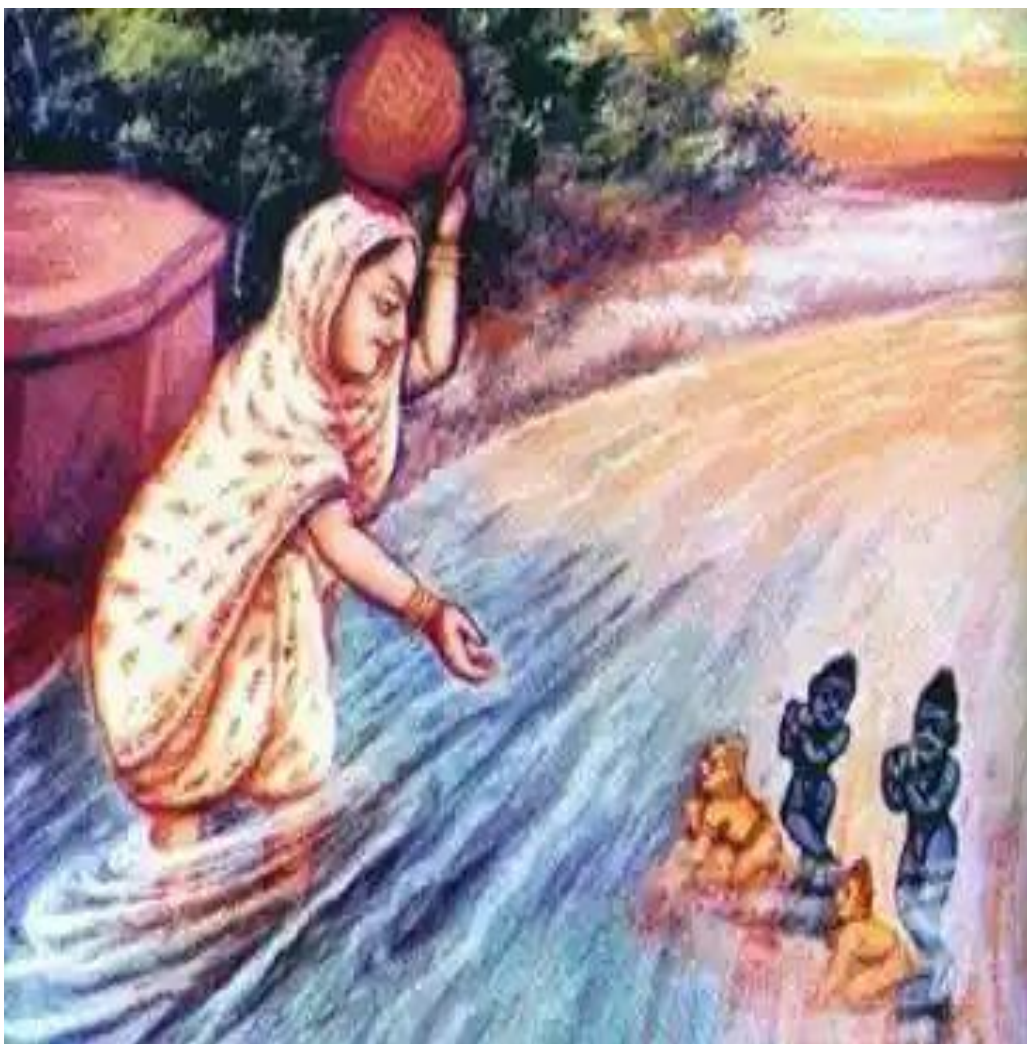
सच में

हर पुष्टि सिंचन से हममें "जय श्री कृष्ण" का भाव जागे,

हर पुष्टि चित्रजी के दर्शन से हममें "जय श्री कृष्ण" अंतर में प्रकटे

हर पुष्टि सत्संग में कर्ण या मुख स्पर्श से हममें "जय श्री कृष्ण" की अनुभूति होये

हर पुष्टि मनोरथ में तन मन धन की सेवा रीत से हममें "जय श्री कृष्ण" उजागर हो

हर पुष्टि उत्सव से रोमें रोम में पुष्टि रंग निखरने से हममें "जय श्री कृष्ण" रंग खिलें

हर व्यक्ति जब जब भी जहां जहां भी पुष्टि पथ पर मिलने से हममें "जय श्री कृष्ण" का उच्चारण जागे

तो समझना हममें

पुष्टि सिंचन भाव जाग रहा है।

पुष्टि दर्शन अंतर में प्रकट हो रहा है।

पुष्टि सत्संग की अनुभूति हो रही है।

पुष्टि मनोरथ उजागर हो रहा है।

पुष्टि उत्सव रंग खिल रहा है।

इसलिए पुष्टि आनंद के लिए सर्वे व्यक्ति को "जय श्री कृष्ण" कहने से या झिलने से हम "वैष्णवता" का अलौकिक स्पर्श करके

"श्री वल्लभाचार्यजी" को पुष्टि सिद्धांत सुधा दंडवत प्रणाम करते है।

"श्री यमुनाजी" को पुष्टि रस सुधा पान कराते है।

"श्री गिरिराजजी" को पुष्टि रज भक्ति रस प्रदान करते है।

"श्री अष्टसखाजी" को पुष्टि कीर्तन रस अर्पण करते है।

"Vibrant Pushti"

"शयन दर्शन" शयन का अर्थ पोढना या सो जाना नहीं है। शयन का अर्थ है श + अयन = शयन।

श - शांत - शरण - शमन - शोध - शपथ।

अयन = गति - गमन - मार्ग - योग्यता की ओर - निश्चित दिशा की ओर - आश्रम - वास करना।

"शयन दर्शन"

श्री प्रभु पुरे दिन कार्य रत रह कर अब खुद को शांत करने के लिए स्थितीप्रज्ञ अवस्था के लिए निश्चित स्थान पर पहुँचना।

श्री प्रभु पुरे दिन के कार्य सिमट कर खुद को योग्यता की ओर गति करने अपने तन मन और धन को नव चेतना प्रदान करने निश्चित आश्रम में वास करने पहूँचना।

श्री प्रभु पुरे दिन के कार्य की नित्यता के लिए जगत के सारे तत्वों को आंतरिक और बाह्य परिक्षण करने योग्य शोध सिंचन करने अपने आवास में पहूँचना।

श्री प्रभु पुरे दिन के क्रिया और सोच के अनुसार गति करते समय अनुरूप खुद की भूमिका का पृथक्करण करने अपने आप को अपनी ही शरण में धर कर तनुनवत्व धारण करने अपने आप को अपनो से समर्पित करते है।

श्री प्रभु पुरे दिन को जगाये हुए हर तत्व की उर्जा का शमन करके आते हुये काल से नये रीत और प्रीत से उजागर करने हर एक तत्व को योग्य स्थान पर प्रस्थापित करते है।

यही "शयन" है।

हम यही "शयन" का दर्शन करके खुद में भी यही प्रकारके परिवर्तन की शिक्षा संस्कार ग्रहण करने हम "शयन दर्शन" करते है।

यही है "शयन दर्शन" की महत्वता!

"Vibrant Pushti"

निरखु निरखु श्री वल्लभ सेवा रीत

स्नान करावे केसर घोळी श्री वल्लभ सूत

अंग अंग पहेरावे स्वामीजी पीलु पीतांबर

भाले सजावे गिरिराज व्रज रज तिलक

हडपची हिरलो चिपकावे विठ्ठल नाथ

गोकुलनाथजी धरावे तुलसी वर माल्या

झारीजी यमुना पान राखे मुख सनमुख

आरती अष्टसखा करे संग कीर्तन ध्यान

धन्य धन्य पुष्टि सेवा नीत नीत पामीऐ

जय श्री कृष्ण निहाळीये तत्वें तत्वें

"Vibrant Pushti"
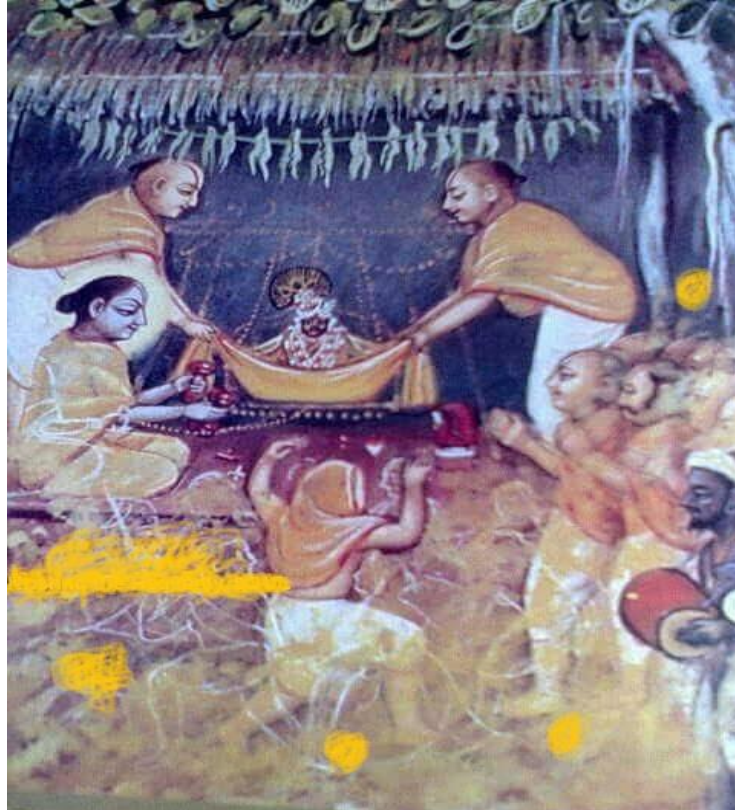
तुम अपना दिल लूटावो

तुम अपना भाव लूटावो

तुम अपना तन मन लूटावो

तुम अपना अंतरंग लूटावो

तो

हम भी उनके चरण की सेवा करें

"Vibrant Pushti"
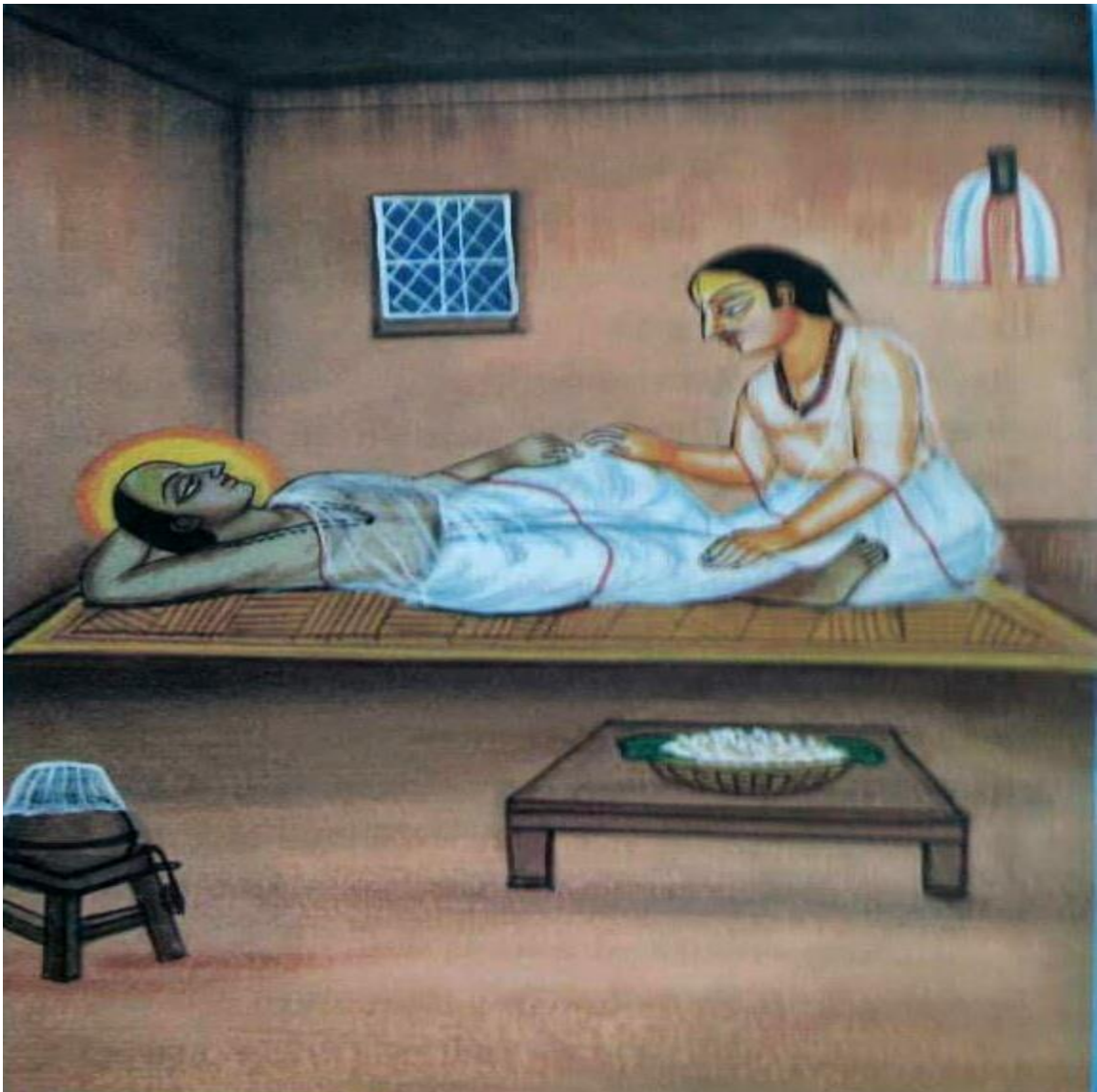
पुष्टि मार्ग है पुष्ट परम मनुष्य का मार्ग

जीवन को अष्टसखा बनाये

न कोई जीव से तृष्णा करे

न कोई सृष्टि से स्वार्थ सांधे

न कोई प्रकृति से अविद्या जगाये

न कोई वृत्ति से जीवन जीये

न कोई प्रपंच से धन कमाये

न कोई कर्म से पाप संधाये

नहीं कोई है आज ऐसा कुल

क्यूँ बार बार श्री वल्लभ को डूबोय

वल्लभ सदा रहे वैष्णव में

वल्लभ सदा रहे सेवा में

वल्लभ सदा रहे अनन्यता में

वल्लभ सदा रहे शरणागत व्यवहार में

वल्लभ सदा रहे पुष्टि प्रेम रीत में

" Vibrant Pushti"

तुम्हें नयन से निहाले तो ऐसी

तुम्हें श्वास से स्पर्शे तो ऐसी

तुम्हें ख्याल से सोचे तो ऐसी

तुम्हें विरह से तडपाये तो ऐसी

तुम्हें प्रीत से जुडे तो ऐसी

तुम्हें अंतरंग से रंगे तो ऐसी

तुम्हें आत्म से प्रकटाये तो ऐसी

तुम्हें जगत से नजारे तो ऐसी

तुम्हें धर्म से संस्कृते तो ऐसी

तुम्हें तन से तरंगे तो ऐसी

तुम्हें मन से मनाये तो ऐसी

तुम्हें दिल से डूबाये तो ऐसी

कैसी है तु ! पल पल निकट

सकल सकल साथ साथ

सागर सागर पार पार

अंबर अंबर धार धार

किरण किरण ज्योत ज्योत

हाँ! इसलिए तो "पुष्टि" है।

" Vibrant Pushti "

भूलत जागत जागत खोवत खोवत भूलत बार बार जागत
जीवन जीता आया
धर्म अपनाया
समाज अपनाया
अपनाया जन्म भूमि संस्कृत

जैसे जैसे बहे धारा

हर धारा में बहता गया

न समझ आया कैसी है धारा

डूबता डूबता जीता आया

स्मरण पाया एक पल एक परब्रह्म
खुद जागने से पाओगे सत्य समझ
जागता जागता हर एक को जगाया
तब समझ पाया ब्रह्म संबंध

आनंद लूटाये आनंद पाये

भौतिक बांधे भौतिक बंधाये

जीवन सुख दुःख में बाँटे

हम शिखे यही जगत से

आनंद परमानंद कैसे लूट लूटाये
जो खुद को जगाता जाय
वंदन करते है यही जगत को
प्रणाम करते है यही प्रकृति को

हमें पल पल उजाला करता जाय
"Vibrant Pushti"
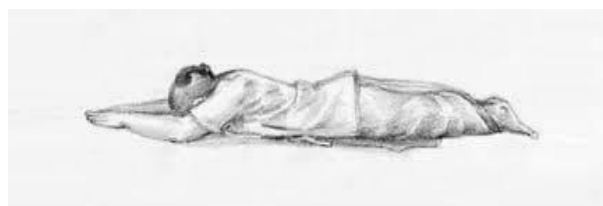
न जाने धर्म अपनाया

न जाने पाठ पठन किया

न जाने भागवत सप्ताह आयोजन रचाया

न जाने गुरु दिक्षा धारी

कैसी है यह विडंबना जो संजोग संजोग सब कुछ अपनायी

यही है मेरा जीवन

इसलिए है मेरा जन्म

एक दौडे तो मैं दौडा

पीछे पीछे नयन बंधाई

मैं पुष्टि तु पुष्टि कह कर

जीवन खेल रचाई

अष्टसखा न समझ पाया

षोडश शिक्षा न समझ आया

इसलिए आज

दंडवत बार बार चरण पठाया

"Vibrant Pushti"

पुष्टि से बसे सुबोध वल्लभा

कीर्तन से बसे अष्टसखा ज्ञान

व्रज रज से बसे गिरिराज वर्य

तनुनवत्व से बसे चतुर्थ प्रिया

वैष्णव से बसे व्रज गोकुल वास

ब्रह्म संबंध से बसे परब्रह्म श्रीनाथ

अष्टाक्षर मंत्र से बसे निधि स्वरुप

पुष्टि सेवा से बसे प्रियतम श्याम रुप

" Vibrant Pushti "

मन से सदा मनन करना

तन से सदा तनमय रहना

इन्द्रियों से सदा पुष्टि सेवा करना

आत्म से सदा परम वैष्णव रज स्पर्श पाना

यही पुष्टि मार्ग है

हर नयन में घनश्याम बसे

"दर्शन" जो समीप है, जो निकट है, जो जगत के हर एक पदार्थ को पहचान सके।

दर्शन नयनों से होते है पर बिना नयनों से भी होता है।

दर्शन विचार से, दर्शन स्मरण से, दर्शन स्वर से, दर्शन गीत से, दर्शन संगीत से, दर्शन सुगंध से, दर्शन कीर्तन से, दर्शन भाव से, दर्शन भजन से, दर्शन भक्ति से, दर्शन ज्ञान से, दर्शन साँस से, दर्शन उर्जा से, दर्शन स्पर्श से, दर्शन सेवा से, दर्शन प्रसाद से, दर्शन रंग से, दर्शन तरंग से, दर्शन वायु से, दर्शन जल से, दर्शन आधिभौतिक से, दर्शन आधिदैवीक से, दर्शन आआध्यात्मिक से, दर्शन गुरु से, दर्शन गुरु आज्ञा से, दर्शन चरित्र से, दर्शन जिसके द्वारा से, दर्शन आयोजन से, दर्शन प्रयोजन से, दर्शन संकेत से, दर्शन लीला से, दर्शन कर्म से, दर्शन व्यूह से, दर्शन रीत से, दर्शन विरह से, दर्शन मिलन से, दर्शन संकल्प से, दर्शन ख्याल से, दर्शन ख्वाब से, दर्शन इच्छा से, दर्शन योग से, दर्शन भोग से, दर्शन ध्यान से, दर्शन समर्पण से, दर्शन शरणागत से, दर्शन संबंध से होते है।

दर्शन के कहीं प्रकार है, हर प्रकार से दर्शन करने से दर्शन की योग्यता समझ आती है, जिससे दर्शन की सायुज्यता, सार्थकता, सामर्थ्यता की अनुभूति होती है। जिससे हममें जिज्ञासा, संस्कार, पद्धति प्रकट होती है। यही जिज्ञासा, संस्कार या ने धर्म, और पद्धति हमारे जीवन को घडता है और हमारी पहचान कराता है।

यही सत्य है।

"Vibrant Pushti"

तन मेरा क्या है?

छूआ है जबसे व्रजरज से

छूआ है जबसे गिरिराज परिक्रमा से

छूआ है जबसे यमुना पान से

छूआ है जबसे रमण रेती से

छूआ है जबसे दंडवत प्रणाम से

छूआ है जबसे झारीजी सेवा से

छूआ है जबसे नयन दर्शन से

छूआ है जबसे ख्यालों से

छूआ है जबसे मनोरथ से

तन तेरा हो गया मन न्योछावर हो गया

तन नवत्व हो गया आत्म समर्पण हो गया

तन शुद्ध हो गया चित्त हरण हो गया

तन सेवा हो गया धन प्रसाद हो गया

तन वपु हो गया जीवन भक्ति हो गया

रीत है पुष्टि रंग की ऐसी

शरण है पुष्टि स्पर्श की ऐसी

सुगंध है पुष्टि संग की ऐसी

संबंध है पुष्टि दर्शन की ऐसी

"Vibrant Pushti"

कैसे कैसे विचार है

कैसे कैसे कहना है

कैसी कैसी बातें है

कैसी कैसी रीत है

पुष्टि को जानने पुष्टि ब्रहमसंबंध समझे

पुष्टि को समझने पुष्टि दर्शन समझे

पुष्टि को पहचानने पुष्टि चरित्र पहचाने

पुष्टि का स्पर्श करने पुष्टि सेवा करें

पुष्टि की महक पाने पुष्टि सत्संग पाये

पुष्टि को आंतर बाहय शुद्धि जगाने पुष्टि उत्सव जगाये

पुष्टि रस पीने पुष्टि रसात्मक षोडश रीत पीये

पुष्टि प्रीत में डूबने पुष्टि जीवन अपनाये

क्यूँकी

खुद ही वल्लभ!

खुद ही यमुना!

खुद ही गिरिराज!

खुद ही अष्टसखा!

खुद ही श्री नाथजी!

न भरोसा किसी पर जो कोई भी कुल के हो

हमें तो खुद को वैष्णव होना है

इसलिये

मेरे तन मन धन श्री पुष्टि के चरणों में

कभी सोचा है कभी समझा है

कृष्ण कौन है? यमुना कौन है?

कभी जागा है कभी अपनाया है

वल्लभ कौन है? गिरिराज कौन है?

कभी छूआ है कभी एहसास किया है

व्रज रज क्या है? गोकुल क्या है?

कभी बसाया है कभी जगाया है

अष्टसखा क्या है? वैष्णव क्या है?

कभी स्पर्शा है कभी सिंचा है

सेवा क्या है? परिक्रमा क्या है?

कभी बसाया है कभी निभाया है

दर्शन क्या है? पुष्टि सिद्धांत क्या है?

कभी पहचाना है कभी जाना है

मैं कौन हूँ? जगत क्या है?

यही मन है यही तन है

यही संसार है यही जन्म है

समझे तो पाया

जगाया तो पाया

यही है परब्रह्म की रचना

"Vibrant Pushti"

"निरोध"

श्री वलल्भाचार्यजी ने पुष्टि अस्मिता से जगत के जीव तत्वों को अनेक प्रकार से सिंचन किया है।

"निरोधलीला" अति सूक्ष्म और अति ज्ञानात्मक और योग्यात्मक लीला है। जिसमें जीव तत्व को जागृत करके श्री प्रभुमय करने यह लीला रचायी है।

जगत अत्यंत प्रपंच से भरा है और यही प्रपंच में जीव भटक जाता है। यह भटकने से परिवर्तन करने और योग्य दिशा प्रदान करने यह निरोधलीला करते है।

प्रपंच, दोष, माया, द्वेष, ध्वैत, जर, कपट, अज्ञान, अविद्या जो जगत के जीव तत्व के साथ बंधा हुआ होता है।

यह जीव तत्व को योग्य संस्कार शिक्षण और जागृतता केवल योग्य गुरु ही प्रदान कर सकता है और यह गुरु जगत और खुद को सर्वत्र की योग्य पहचान करा कर तन मन धन का योग्य पूर्वक रक्षण करके श्री प्रभुमय लीला का स्पर्श कराके जीव तत्व को परम तत्व में ऐकात्म करता है। यह लीला को "निरोध" कहते है।

आज के सत्संग में एक बात हमें बार बार संकेत करती है - प्रभु नाम स्मरण।

यह नाम स्मरण हमें जीवन जीते जीते सैद्धांतिक रूप से करना है और साथ साथ खुद के तन मन और धन को भी संवारना है।

यह नाम स्मरण कैसे करना?

यह जीवन जीते जीते सैद्धांतिक रूप से कैसे करना?

खुद के तन मन और धन को यही नाम स्मरण से कैसे संवारना?

तब भी हम "निरोधलीला" को योग्यता से जानेंगे, समझेंगे तो ही कर पायेंगे।

"Vibrant Pushti"

लोकवत लीला और लौकिक लीला

लोकवत लीला जो जगत के समय अनुसार रुढिचुस्ता से, अंधश्रद्धा से, मान्यता से चलती रहती है। जिसमें समाज के रीति रिवाज, धर्म के कहीं नियमों और जीवन की मान्यता से चलती रहती है।

लौकिक लीला जो मानव जाति अपने मनसे अपनी परिस्थिति से, काल अनुरूप योग्य अयोग्य की सोच या निर्णय बिना करता रहता है।

यह दोनों लीलाओं सदा बहती रहती है। हमें यही लीलाओं को समझते समझते खुदको यह लीलाओं से दूर कैसे रहना वह शिक्षा संस्कार पा कर खुदको तैयार करना है।

"Vibrant Pushti"

"श्रीवल्लभ" श्रीस्वामीनीजु और श्रीप्रभु का विरहात्मक भाव स्वरुप नहीं है।

"श्रीवल्लभ" तो श्रीस्वामीनीजु और श्रीप्रभु के युगल स्वरुप है।

पुष्टिमार्ग की अनोखी रीत यही है की यह रीत में जीव ही खुद श्रीवल्लभ हो सकता है,

श्रीयमुना हो सकता है,

श्रीगिरिराज हो सकता है।

यह अति न्यारी और अति सामर्थ्यशिल पुष्टि रीत है।

"Vibrant Pushti"

श्रीस्वामीनीजु और श्रीप्रभु में विरहात्मकता है पर वह कैसे और क्यूँ है वह रीत भिन्न है, पर वह विरह श्रीवल्लभ कैसे हो सकते है?

"Vibrant Pushti"
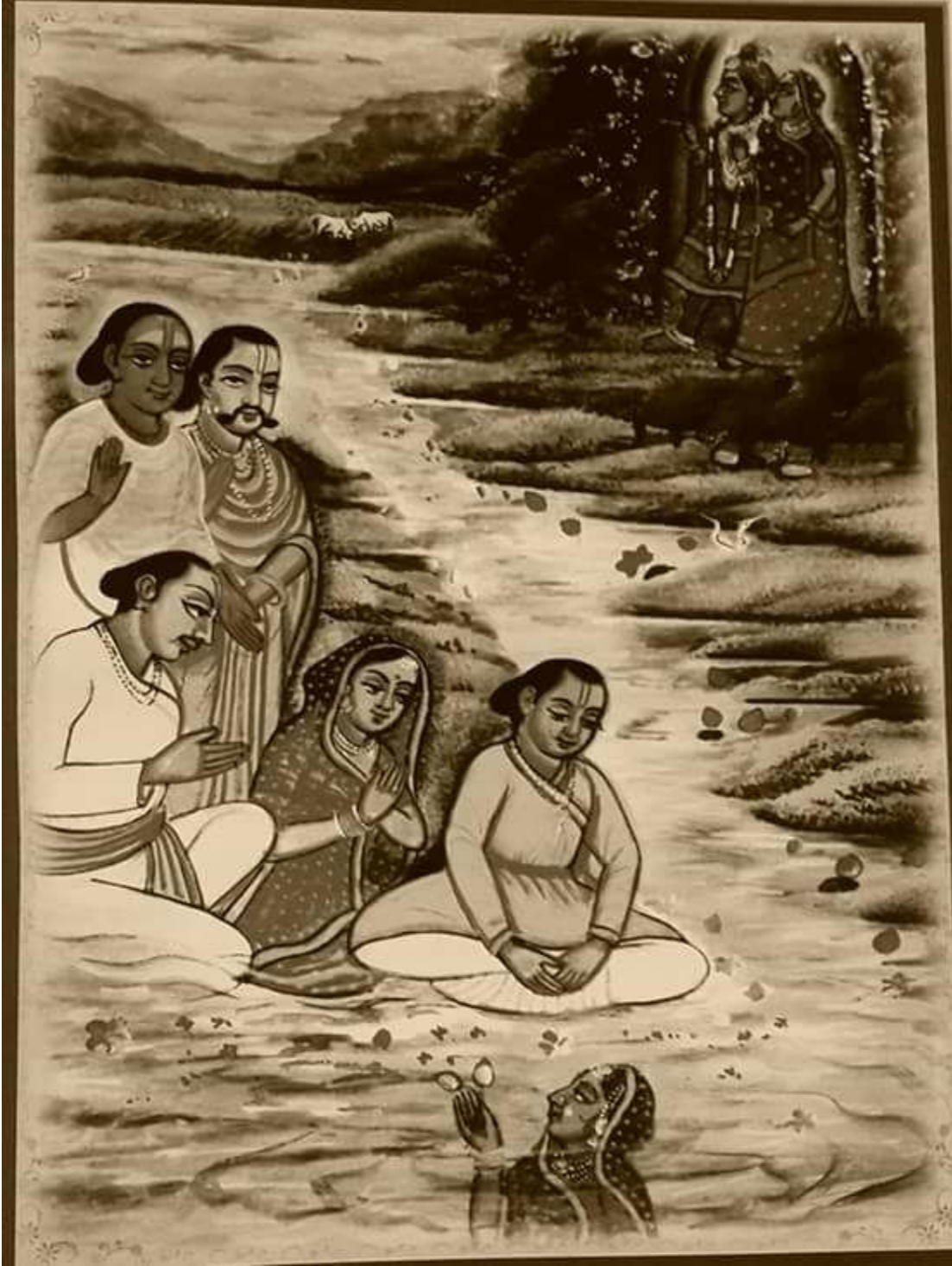
पुष्टिमार्ग के सर्व प्रथम, सर्वोच्च, सर्वोत्तम दीनता सभर, समर्पित, शरणागत आत्म स्वरूप वैष्णव "श्री हरिरायजी" को हमारा दंडवत प्रणाम।

सत्य है कि न कुल का ख्याल रखा न मनुष्य का ख्याल रखा।

रखा केवल "श्री वल्लभ शरण" "श्री वल्लभ चरणस्पर्श सिद्धांत"

यही मेरे "श्री वल्लभ कुल" यही मेरे संस्कार।

यही मुझे पाना है यही मुझे पहचानना है।

"Vibrant Pushti"
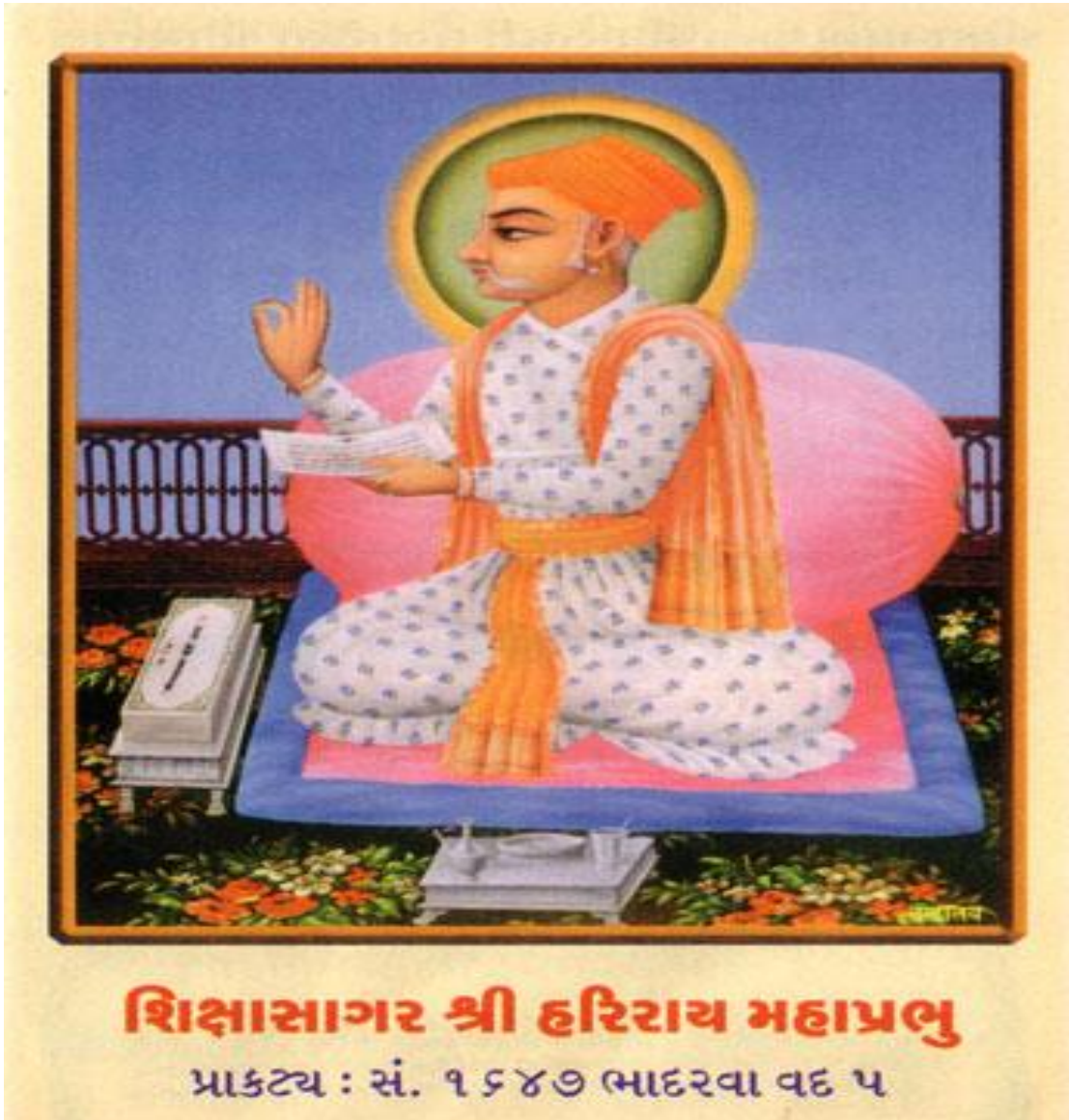
"सर्व अन्य मनोभ्रम"

"श्री वल्लभाचार्य" सिद्धांत और अति सूक्ष्म संकेत से ज्ञान प्रमाणित और कर्म प्रस्थापित से खुद में और अपने हर आत्मज, आत्मजन को सर्वोत्तम शिक्षा प्रदान की है।

"सर्व अन्य मनोभ्रम" जगत में सर्वत्र और सर्व अन्य है और जिससे केवल और केवल मनोभ्रम ही उत्पन्न होता है। जिससे हर कोई जीव भिन्न भिन्न भ्रमणा में रहता है और सदा अन्याश्रय में जीवन जीता है।

इसलिए "सर्व अन्य मनोभ्रम" का त्याग करके केवल खुद की ही आंतरिक पहचान करे, खुद को ही खुद में ढूँढे तो जागृत हो कर मन को स्थिर कर सकता है।

यही योग्य द्रष्टि है, यही सत्य है। न कभी अन्यता से मनोभ्रम में अन्याश्रय होगा।

"Vibrant Pushti"
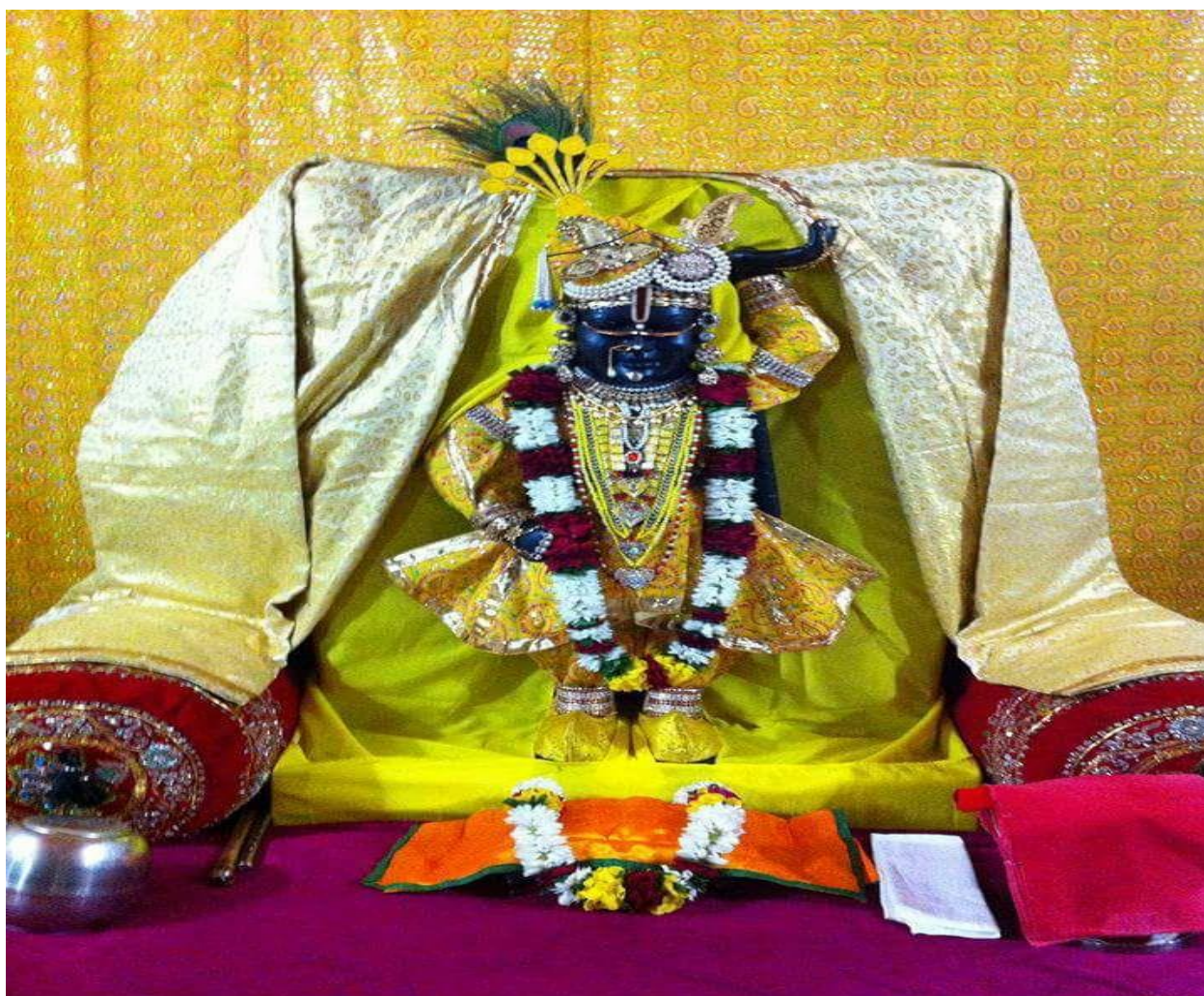
कृष्ण कृष्ण को सोप दिया

तो कृष्ण कृष्ण से आँख मिचौली क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से जोड दिया

तो कृष्ण कृष्ण से अधुरप क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से रंग दिया

तो कृष्ण कृष्ण से द्विरंग क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से वरण किया

तो कृष्ण कृष्ण से छल क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से अंश पाया

तो कृष्ण कृष्ण से रसहीन क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से धर्म संस्थापाया

तो कृष्ण कृष्ण से अधर्म क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से प्रीत जताई

तो कृष्ण कृष्ण से बेवफाई क्यूँ?

कृष्ण कृष्ण से रास रचाई

तो कृष्ण कृष्ण से अवैधता क्यूँ?

हे परब्रह्म! आपने मुझे जो भी जन्म - जीवन - संस्कार - संसार - सृष्टि - प्रकृति और ऋणात्मक संबंध दिये है वह निभाते निभाते पुरुषार्थ अविरत क्षण क्षण करता रहता हूँ, पर कभी कभी ऐसा विचार भी जागता है - यह कैसा जीवन?

साथ साथ ऐसा भी विचार जागता है - हे कृष्ण! तुम्हें भी ऐसा होता ही होगा तो तु कैसे धीरज और संयम रखता है तो मैं भी शांत हो जाता हूँ।

हे कृष्ण! क्या ऐसा ही जीवन है?

हर अंश ऐसे ही!

"संबंध" किसे कहते है?

पता है आपको?

पता है?

आज हम सब किस किस संबंध से जी रहे है, पता है न!

माता पिता से कोई कुछ नही कह पाते

पति पत्नी से नही कुछ कह पाते

पत्नी पति से नही कुछ कह पाती

माता पुत्र - पुत्री से नही कुछ कह पाती

पिता पुत्र - पुत्री से नही कुछ कह पाते

पुत्र - पुत्री माता पिता से कुछ कह नही पाते

माता पिता बहु को कुछ नही कह पाते

बहु माता पिता को कुछ कह नही पाती

यह तो सिर्फ कुटुंब के संबंध से जुडे है उनकी ही बात है

तो

जो कुटुंब के संबंध से नही है उनकी बात तो हम सोचते भी नही है और करते भी नही है।

कैसी हालत है जीवन की!

यही बात से ही श्री वल्लभाचार्यजी ने जो "ब्रह्मसंबंध" का जो सिद्धांत जताया है - दर्शाया है, इसके उपर चिंतन करना अति आवश्यक है।

क्यूँकि जो भी दिक्षा हम जिससे भी ग्रहण करते है, यह "ब्रह्मसंबंध" का सिद्धांत समझना अति आवश्यक है।

"ब्रह्मसंबंध" का जो भी सूत्र और सत्य शिक्षित योग्यता है यह भी एक कुटुंब के माहात्म्य से ही जुडी है।

अति गहराई से अध्ययन आवश्यक है। जो समझ गया उन्होंने "ब्रह्मसंबंध" का सामर्थ्य पा लिया और श्री वल्लभाचार्यजी के शरण का स्पर्श उन्होंने पा लिया।

" कृष्ण " साधन

" यमुना " साधन

" गिरिराज " साधन

" वल्लभ " साधन

" विठ्ठल " साधन

" अष्टसखा " साधन

" पुष्टि मार्ग " साधन

सच! हमने जन्म पाया ऐसे मातपिता से

सच! हमने संस्कार पाया ऐसे कुटुंब से

सच! हमने शिक्षा धरी ऐसे समाज से

सच! हमने काम सीखा ऐसे संसार से

सच! हमने धर्म धरा ऐसे बोधपाठीओ से

" कृष्ण " का कर्म का सिद्धांत नही पहचाना

" यमुना " का कृपा जलधि संश्रिते नही समझा

" गिरिराज " का स्थितिप्रज्ञता नही स्पर्शा

" वल्लभ " का सुबोधन नही जगाया

" विठ्ठल " का सेव्य प्रकार नही संवारा

" अष्टसखा " का वैष्णवता नही भक्ताया

" पुष्टि मार्ग " का पथ नही शरणाया

हाँ! कभी भी एकांत धारण करके सोचना

हमने आजतक का सारा जीवन केवल व्यवहार से ही गुजारा है?

हर तरह से अर्थोपार्जन में ही लुटा

नयन से निहाला

तो स्पर्श पाया श्री वल्लभ शरणं का

स्वरों से कुछ कहा

तो स्पर्श पाया श्री वल्लभ आज्ञा का

विचारों से कुछ समझा

तो स्पर्श पाया श्री वल्लभ सिद्धांत का

विधापीठ परिवार से कुछ जाना

तो स्पर्श पाया श्री वल्लभ रज का

कुछ सत्संग से कुछ आज्ञा सुनी

तो स्पर्श पाया श्री वल्लभ निकटता का

दर्शन से निहारा

तो स्पर्श पाया श्री सुबोधिनीजी सिद्धांत का

सूत्र पठन से गाया

तो स्पर्श पाया श्री मद् भागवत गान का

अलौकिक अलौकिक अलौकिक

कितना मधुर स्पर्श
जो कहीं बारों से ढूँढता था
जो कही जन्मों से इंतजार करता था
जो कहीं जीवन से इजहार करता था
जो कहीं पुरुषार्थ से खुदको केलवता था
जो कहीं साथीओ से पहचानता था
जो कहीं आशीर्वादो से कृपा पाता था

सच पाया केवल अभी स्पर्श श्री वल्लभ
कृतकृत करना हर क्षण हे तन मन धन

"ब्रह्म संबंध" क्या समझते है हम यह सिद्धांत को?

"ब्रह्म संबंध" क्या समझते है हम यह सत्य को?

"ब्रह्म संबंध" क्या समझते है हम यह सूत्र को?

"ब्रह्म संबंध" क्या समझते है हम यह दिक्षा को?

"ब्रह्म संबंध" क्या समझते है हम यह विज्ञान को?

"ब्रह्म संबंध" क्या समझते है हम यह पुष्टि को?

"ब्रह्म संबंध" क्या समझते है हम यह शास्त्रार्थ को?

"ब्रह्म संबंध" क्या समझते है हम यह धर्म को?

"ब्रह्म संबंध" क्या समझते है हम यह कर्म को?

"ब्रह्म संबंध" क्या समझते है हम यह अनन्य आश्रय को?

"ब्रह्म संबंध" क्या समझते है हम यह योग्यता को?

"ब्रह्म संबंध" क्या समझते है हम यह विश्वास को?

"ब्रह्म संबंध" क्या समझते है हम यह संबंध को?

"ब्रह्म संबंध" क्या समझते है हम यह निधि को?

"ब्रह्म संबंध" क्या समझते है हम यह नित्य को?

"ब्रह्म संबंध" क्या समझते है हम यह व्याकरणार्थ को?

" Vibrant Pushti "

"ब्रह्म संबंध" का सिद्धांत

गहराई से अध्ययन - चिंतन - स्पर्श - क्रियात्मक - पुरुषार्थ और अनुभूति है

जो हमारे कही ऋषि मुनियों, संतो, भक्तों, तत्वचिंतको और आचार्यों ने यह "ब्रह्म संबंध" सिद्धांत का संसोधन किया, जागृत किया, पुष्ट किया और अपनाया, अपनाते और क्रियाशील करते प्रमाणित किया। खुद ने अध्ययन करके - चिंतन करके - स्पर्श करके - क्रियात्मक करके - पुरुषार्थ करके जो परम अनुभूति पायी वही सिद्धांत संस्थापन से हमारी संस्कारीता में प्रस्थापित करके हममें उत्कृष्ट करने का संचालन किया।

एक प्रत्यक्ष द्रष्टांत से समझा रहा हूँ

हम एक मानव जीव है और हममें कहीं प्रकार के अंग है - हममें कहीं प्रकार के साधन है - हममें कहीं प्रकार के रस है - हममें कहीं प्रकार के जीव है - हममें कहीं प्रकार के सृजन है - हममें कहीं प्रकार के तत्व है - हममें कहीं प्रकार के योग है - हममें कहीं प्रकार के नवत्व है - हममें कहीं प्रकार के प्रयोग है - हममें कहीं प्रकार के उधोग है - हममें कहीं प्रकार के स्वभाव है - हममें कहीं प्रकार के प्रमेय है - हममें कहीं प्रकार के जीवन है - हममें कहीं प्रकार के जन्म है - हममें कहीं प्रकार की सृष्टि है - हममें कहीं प्रकार की प्रकृति है - हममें कितने प्रकार के गुण है - हममें कितने प्रकार के गुणधर्म है।

यह ही प्रमाणित करता है की हममें कितने ब्रह्म है और हममें कितने संबंध है।

क्या यह कोई सिद्धांत के अनुसार ही एक रचना या सर्जन नही है?

हमारी रचना या सर्जन सिद्धांत के बिना हो ही नही सकता!

यह सिद्धांत जानना - समझना - पहचानना और यही ही सिद्धांत से पुरुषार्थ करना ही हमारा संस्कार है - शिक्षा है - योग्यता है - सिद्धता है - सत्यता है - साक्षरता है - सार्थकता है।

" Vibrant Pushti "

એક ઘર ઘડીએ એક એક માનવ જોડી

પ્રથમ માનવ પિતા મારા

જે ને શ્રીવલ્લભ ચરિત્ર સિદ્ધાંત શીખવાડીયે

બીજા માનવ માતા મારી

જે ને શ્રીપુષ્ટિ સેવા વિજ્ઞાન શીખવાડીયે

ત્રીજા માનવ ભાઈ મારા

જે ને શ્રીઅષ્ટસખા કીર્તન શીખવાડીયે

ચોથા માનવ ભાભી મારા

જે ને નિત નૂતન ઋતુ સામગ્રી શીખવાડીયે

પાંચમા માનવ બહેન મારી

જે ને નવ નવ સેવા શૃંગાર શીખવાડીયે

છઠ્ઠા માનવ સખી મારી

જે ને સાથ સાથ વૈષ્ણવતા શીખવાડીયે

સાતમાં માનવ નણંદ મારી

જે ને સદા પુષ્ટિ અપરસ શીખવાડીયે

આઠમાં માનવ પતિ મારા

જે ને ડગ ડગ વિશુદ્ધ યાત્રા શીખવાડીયે

નવમ માનવ હું પોતે મારી

જે ને ક્ષણ ક્ષણ સેવક્તા શીખવાડીયે

આજ જીવન આજ સંબંધ આજ આનંદ

જે ને સર્વથા નિઃસ્વાર્થતા શીખવાડીયે

એક ઘર એક એક માનવ જોડી

હર હર હરિ હરિ માં જન્મ સફળ શીખવાડીયે

"જય શ્રી કૃષ્ણ"

" Vibrant Pushti "

अति गहराई और सूक्ष्मता से प्रश्न पूछ रहा हूँ

श्री वल्लभाचार्यजी ने तीन बार पृथ्वी या भू मंडल की परिक्रमा की, तो यह पृथ्वी या भू मंडल की परिक्रमा में सागर तो आया होगा।

अगर सागर आया होगा, तो कहीं भी उनके परिक्रमा मार्ग के नकशे में सागर का चिह्न या निर्देश या उल्लेख नहीं है, इसका अर्थ यह है कि उनकी पूर्णत परिक्रमा बिना सागर की है।

तो ऐसा क्यूँ है?

अब हमने हमारे चिंतन से और शास्त्रोक्त से हमारा विचार कहते है

श्री वल्लभाचार्यजी ने जितनी भी परिक्रमा की इनमें सागर का मार्ग उन्होंने ही हमारी वैदिक संस्कृति के सिद्धांत आधारित ही त्याग कर दिया था। यह सिद्धांत हमारे सारे श्रेष्ठीयों ने सदा अपना कर खुद को भी ऐसे मार्ग से दूर रखा है।

हमारी वैदिक संस्कृति आधारित हमा...

" Vibrant Pushti "

" हवेली "

पुष्टि मार्ग की मूलभूत स्थली

कितना भव्य शब्द है - हवेली

हवेली अर्थात ऐसा योग्य स्थान जहां समृद्धि हो - शुद्धता हो - पवित्रता हो - न्याय हो - शिक्षा हो - धर्म हो - विश्वास हो - श्रेष्ठता हो - ज्ञान हो - सन्मान हो - संस्कार हो - संस्कृति हो - सेवा हो - जागृतता हो - सर्व श्रेष्ठ प्राकट्य हो।

जो स्थली अहंकार को नष्ट करती हो

जो स्थली अज्ञान को नष्ट करती हो

जो स्थली संस्कार का पार्दूभाव करती हो

जो स्थली धर्म का सिंचन करती हो

जो स्थली मनोरथ का पूर्णत करती हो

जो स्थली ज्ञान भाव का सृजन करती हो

जो स्थली समानता का आचरण करती हो

जो स्थली आनंद का उत्सव करती हो

जो स्थली मन का स्थितिप्रज्ञता प्रवर्ति हो

जो स्थली तन का शुद्धतम् पुरुषार्थती हो

जो स्थली धन का ज्ञानवर्धक सहयोगी हो

जो स्थली जीवन का वैष्णवत् संस्कारती हो

यह स्थली को "हवेली" कहते है।

" Vibrant Pushti "
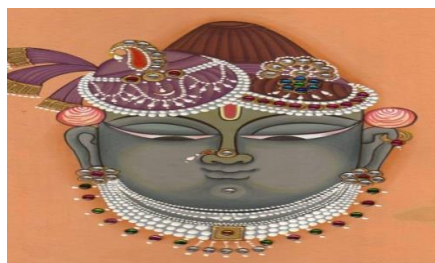
" हवेली "
हमने हमारा संप्रदाय आधारित यह स्थली के कहीं नामांकन किया - जैसे
गोवर्धन नाथजी हवेली
द्वारकाधीश हवेली

मदनमोहन हवेली
बालकृष्ण हवेली
गोकुल नाथजी हवेली
विठ्ठल नाथजी हवेली
गोकुल चंद्रमाजी हवेली
कल्याणरायजी हवेली
पुरुषोत्तमजी हवेली
बैठकजी
नंदालय
आदि आदि आस्था प्रमाणित पुकारते रहते है - कहते रहते है।
यह जो नामांकन होता है यह हमारा भाव और हमारा विश्वास ऐसी स्थली में ऐसा द्रढ होता है जो हमें सदा के लिए भाता रहता है - हममें आनंद और संस्कृति की पुष्टि करता रहता है।
हम कोई कार्य से बाहर गांव या कोई देश या कोई परदेश हमें ऐसी स्थली से जो शकुन मिलता है जो हमें सदा सुरक्षित और स्वास्थ्यी रखता है - यह एक मानव जीवन की योग्य श्रद्धा है।
हम कोई शुभ कार्य करने का संकल्प और आयोजन करते है तब भी ऐसी स्थली हमें शुभाशुभ चिह्न प्रदान करती है।
हम कोई कला सीखना हो या जानना हो या प्रदर्शित करना हो इससे उत्तम मंच कहीं नहीं पायेंगे।
हवेली ऐसा सर्वोच्च माध्यम है जो मानव में जागती सकारात्मक हर भूमिका यहां प्रदान होती है।
" Vibrant Pushti "

1.00
महाप्रभु वल्लभाचार्य 1479-1531
MAHAPRABHU VALLABHACHARYA
भारत
INDIA

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - श्री वल्लभ

"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

" Vibrant Pushti "

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "